Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केनोपनिषद्

पद्यात्मक हिन्दी अनुवाद

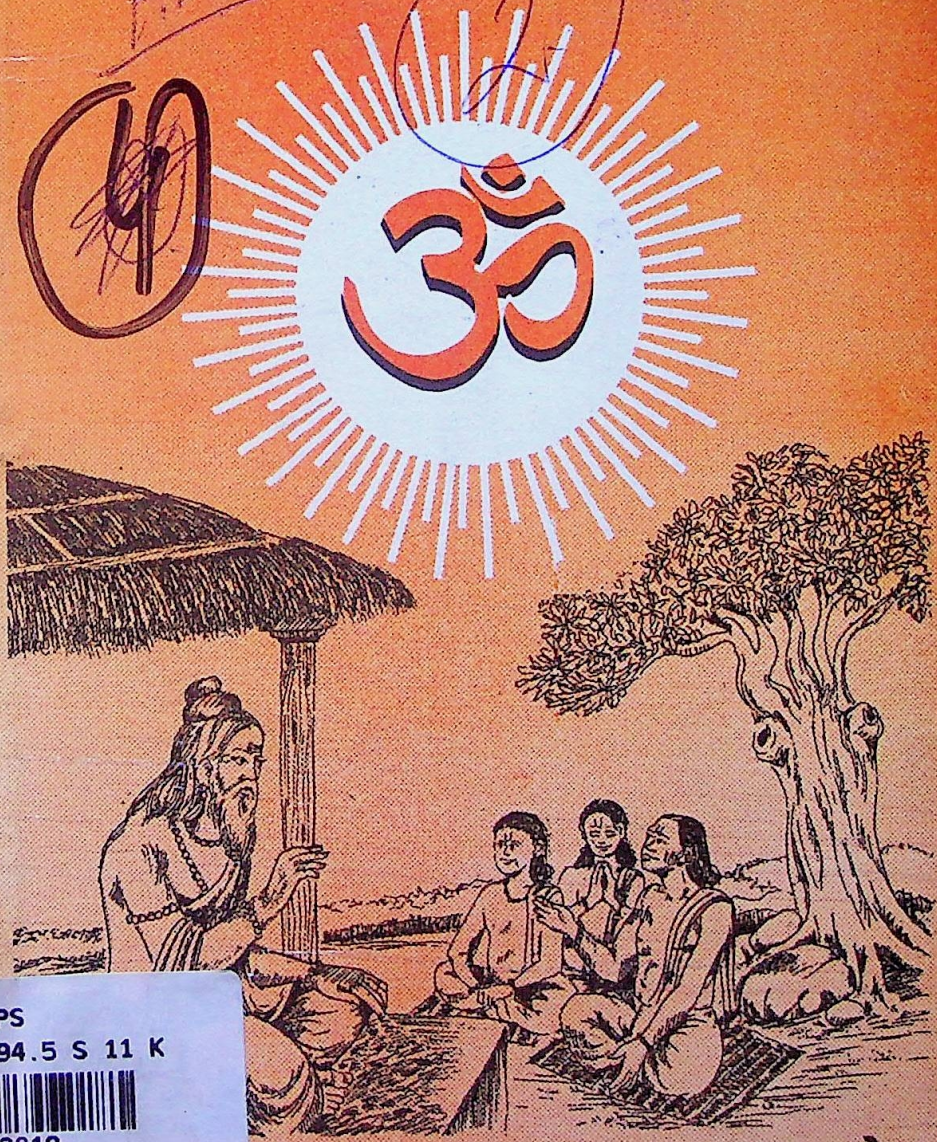

SPS
294.5 S 11 K
63819

शकुन्तला सेठ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

63819

Kanopinshad
by
Shakuntala
Seth.

ॐ

केनोपनिषद्

पद्यात्मक हिन्दी अनुवाद

ॐ

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म

शकुन्तला सेठ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सरस्वती सेठ प्रकाशन

प्रकाशिका : शकुन्तला सेठ

प्रथम संस्करण

अप्रेल 2011

294.5

S11 K

C लेखिका

मूल्य : 100/- रुपये

प्राप्ति स्थान :

125 कूचा भोला नाथ,
धौंथली बाज़ार, जम्मू 180 001

मुद्रक : शिव आर्ट प्रिंटर्स
मौहल्ला उस्ताद, जम्मू
दूरभाष : 2547559

आवरण :
श्री सुभाष आनन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रार्थना

माँ भारती के चरणों में

माँ देना वरदान मुझे तुम,
सदा करूँ तेरा अर्चन ।
श्रद्धा निष्ठा दीप जला कर,
नित नव भाव सुमन अर्पण
वाणी मृदुल सत्य पावनी
निर्मल निश्छल मन पाऊँ
तेरे चरणों में हे माता !
जीवन अर्पित कर जाऊँ ।

समर्पण

संयोजित सद्भाव सुमन ये,
अर्पित हैं परब्रह्म विभु को ।
ज्ञान की जोत जलाई जिसने,
किया शुभ्र पावन अन्तर को ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	प्राक्कथन	
	आमुख	
1.	शान्ति पाठ	1–2
	प्रथम खण्ड	
2.	शिष्य का गुरु से प्रश्न	3–4
गुरु का उत्तर		
3.	आत्मा सर्वनियन्ता है	4–6
4.	ब्रह्म अज्ञेय है	7–8
5.	ब्रह्म इन्द्रियातीत है	8–13
	द्वितीय खण्ड	
6.	ब्रह्मज्ञान अनिर्वचनीय है	14–15
7.	शिष्य द्वारा आत्म-अनुभूति विवेचन	15–16
8.	गुरु द्वारा आत्म-अनुभूति का स्पष्टीकरण	16–17
9.	विद्या से आत्मसाक्षात्कार	17–18
10.	आत्म-ज्ञान के बिना विनष्टि	18–21
	तृतीय खण्ड	
यक्षोपाख्यान :		
11.	देवताओं का अहम्	22
12.	यक्ष का प्रादुर्भाव	23
13.	अग्नि की शक्ति परीक्षा	24–25
14.	वायु की शक्ति परीक्षा	26–29

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

15.	इन्द्र का गमन	29
16.	उमा का प्रादुर्भाव	30
	चतुर्थ खण्ड	
17.	इन्द्र को उमा का उपदेश	31
18.	इन्द्र को ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति	32
19.	तीनों देवों का महत्त्व	33
20.	इन्द्र की सर्वश्रेठता	33
21.	ब्रह्म का अधिदैवत आदेश	34
22.	ब्रह्म का आध्यात्मिक आदेश	35–36
23.	तद्वन भाव से ब्रह्मोपासना	36–37
24.	ब्रह्मोपदेश के लिए गुरु से प्रार्थना	38
25.	ज्ञान प्राप्ति के साधन	38–39
26.	ज्ञान प्राप्ति के साधनों की व्याख्या	40–42
27.	वेदांग	43–45
28.	सत्यमायतनम्	45–46
29.	सम्पूर्ण चतुर्थ खण्ड की संक्षिप्त व्याख्या	46–51
30.	यक्षोपाख्याण : आध्यात्मिक संकेत	52–56
31.	कथा सार	56–58
32.	प्रश्न-उत्तर (कविता)	59–60

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्मज्ञान से शाश्वत शान्ति

यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको
यस्मिन्निदं स च वि चैति सर्वम् ।
तमीशानं वरदं देवमीड्यं
निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति ।।

श्वेताश्वतरोपनिषद् ४.११

जो अकेला ही प्रत्येक योनिका अधिष्ठाता है, जिसमें यह सब सम्यक् प्रकारसे लीन होता है और फिर विविधरूप हो जाता है उस सर्वनियन्ता, वरदायक, स्तवनीय देवका साक्षात्कार करके साधक इस परम शान्तिको प्राप्त होता है ।

सूक्ष्मातिसूक्ष्मं कलिलस्य मध्ये
विश्वस्य स्रष्टारमनेकरूपम् ।
विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं
ज्ञात्वा शिवं शान्तिमत्यन्तमेति ।।

श्वेताश्वतरोपनिषद् ४.१४

सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म, अविद्या और उसके कार्यरूप दुर्गम स्थानमें स्थित, जगत्के रचयिता, अनेकरूप और संसारको एकमात्र भोग प्रदान करनेवाले शिवको जानकर जीव परम शान्ति प्राप्त करता है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्राक्कथन

केनोपनिषद् सामवेद के तलवकार ब्राह्मण के अन्तर्गत वर्णित है । 'केन' शब्द से प्रारम्भ होने के कारण यह उपनिषद् "केनोपनिषद्" के नाम से प्रसिद्ध है । इस का प्रतिपाद्य विषय : 'ब्रह्म' है अतः इस में ब्रह्म की अगम्यता, अगोचरता और अनिर्वचनीयता का निरूपण बड़े ही सारगर्भित ढङ्ग से किया गया है । यह उपनिषद् ब्रह्म-ज्ञान से अनुप्राणित है ।

प्रस्तुत उपनिषद् का प्रारम्भ "केनेषितं पतति प्रेषितं मनः" प्रश्न से होता हैं, जिसका अर्थ है यह मन किस की इच्छा से प्रेरित हो कर अपने विषयों पर गिरता है ? अर्थात् अपने वाँछित विषयों के प्रति आकृष्ट होता है ? मंत्र में-मन, आँख, कान, प्राण और वाणी को लक्ष्य बना कर पाँच प्रश्न हैं : किस की इच्छा से प्रेरित हो कर मन अपने वांछित विषयों के प्रति आकर्षित होता है ? किस की प्रेरणा शक्ति से मुख्य प्राण चलता है ? किस की इच्छा से प्रेरित हो कर वाणी बोलती है ? कौन देव आँख और कान को देखने और सुनने के लिए प्रेरित करता है ? ये पाँच प्रश्न उपलक्षण मात्र हैं । इन में अन्तर्निहित हैं वे अनगिण प्रश्न जो प्रति-क्षण मानव मन में उत्तर की अपेक्षा लेकर उभरते हैं । सृष्टि-चक्र की सम्पूर्ण क्रियाएँ मानव मन को अचम्भित कर अभिभूत करती रहती हैं । प्रश्न पर प्रश्न मन को विस्मय से स्तम्भित कर देते हैं । ये ग्रह-नक्षत्र, महाशून्य में बिना किसी आधार के लटके किस से नियन्त्रित हो घूम रहे हैं ? इन सब की गति, स्थिति और परिधि का निर्धारक कौन है ? सागर में उफान है, नदियों में प्रवाह है, ऋतुओं में नियमित परिवर्तन है । नन्हा सा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बीज, एक महान वृक्ष को अपने में समेटे है । बीज का मिटना वृक्ष का जन्म है । सारी सृष्टि अनादि काल से किन्हीं शाश्वत नियमों में बँधी गतिशील है । पुराने पत्ते सूख कर झड़ जाते हैं ; नई फुनगियाँ निकलती हैं । फूल मुरझा कर सूख जाते हैं ; बीज धरती पर बिखर नई पौद से सब ओर हरियाली बिखेर देते हैं । वह कौन सी शक्ति है जो संसृति को सिरजन से नित नव रूप प्रदान करती है ? सूर्य में प्रकाश, अग्नि में दाहकता, जल में तरलता, पृथिवी में घनता, वायु में प्रवाह देने वाला ऐसा कौन महान् संचालक, नियन्ता एवं व्यवस्थापक है जिस की संचालन क्रियाएँ तनिक भी च्युत नहीं होतीं ! जिसके नियम अटल है ; जिसकी व्यवस्था त्रुटि रहित पूर्ण है । उपनिषत्कार ऋषि का उत्तर, "वह है ब्रह्म !" "ओम् अक्षर !" "ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म" अति संक्षिप्त एवं निर्विवादित है । वह ब्रह्म सर्व जगत् का नियन्ता, संचालक एवं व्यवस्थापक है । वह अक्षर अविनाशी ब्रह्म सत् चित् आनन्द स्वरूप है । वह ज्ञानघन तेजोमय है । वह ज्योतियों की ज्योति है । सृष्टि की हर ज्योति में उसी की ज्योति है । हर तेज में उस का तेज है । वह श्रोत्र का श्रोत्र, चक्षु का चक्षु, प्राण का प्राण है अर्थात् कान में श्रवण शक्ति, चक्षु में दर्शन शक्ति प्राण में गतिशीलता वाणी में अर्थ अभिव्यंजक शक्ति उसी सर्वशक्तिमान् ब्रह्म की शक्ति से है । वह सूक्ष्म से सूक्ष्म, अज्ञेय, अगोचर अतीन्द्रिय है । श्रुति कहती है,

न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति
न मनो न विद्मो न विजानीमो
यथैतदनुशिष्यादन्यदेव तद्विदितादथो अविदितादधि ।।

अर्थात् उस ब्रह्म तक न आँख पहुँचती है, न वाणी, न मन । वह सूक्ष्म तत्त्व मन सहित किसी भी इन्द्रिय का विषय नहीं । न हम स्वयं उसे जानते हैं, न कोई दूसरा हमें उसे जना सकता है । कोई तत्त्वदर्शी गुरु भी उस का ज्ञान देने में समर्थ नहीं क्योंकि उसका पूर्ण ज्ञान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

असम्भव है । वह जानने एवं न जानने से अन्य है । उस का ज्ञान भौतिक पदार्थों के समान ऐन्द्रिय नहीं । अतः 'मैं उसे जानता हूँ', यह नहीं कहा जा सकता, 'मैं उसे नहीं जानता', यह भी नहीं कहा जा सकता । उस की अनुभूति विचित्र है । वह जानने व न जानने से विलक्षण है । वह इन्द्रियातीत अवर्णनीय है । वह सर्वात्म है । उस से अन्य कोई उस का ज्ञाता नहीं हो सकता । वह "एकमेवाद्वितीयम्" "प्रतिबोधविदितम्" है । अर्थात् संसार में जो कुछ भी दिखाई देता है उस का ज्ञान बोध है । सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा चिन्तन किए जाने पर आनन्दमय अनुभूति में परिवर्तित वह 'बोध' प्रतिबोध हो जाता है । प्रतिबोधोपलब्ध प्रतीति से जिस आनन्दातिरेक का प्रादुर्भाव होता है, वह उस अज्ञेय का अवभास है अर्थात् वह अज्ञेय का ज्ञान है । उस ज्ञान से हृदय की ग्रन्थियाँ खुलती हैं । विद्या का प्रकाश अज्ञान के अँधेरे को मिटा देता है । इसकी सरल एवं स्पष्ट व्याख्या के लिए गीता के दशम अध्याय का 'विभूति वर्णन' विशेष रूप से उल्लेखनीय है । अर्जुन के यह कहने पर कि "भगवन् मैं किन किन भावों में आपका चिन्तन करूँ ?" उत्तर में भगवान् श्री कृष्ण कुछ एक विभूतियुक्त सत्त्वों के उल्लेख के उपरान्त कहते हैं, "मेरी विभूतियों के विस्तार का अन्त नहीं, संक्षेप में इतना ही कहना है, संसार में जो-जो भी विभूतियुक्त, कान्तियुक्त और शक्ति-युक्त है उसे तू मेरे तेज के अंश की अभिव्यक्ति जान ।" उस सर्वशक्तिमान् सर्वात्म को सर्वत्र सम भाव से देखना, अनुभव करना ही ज्ञान है । इसी ज्ञान से मुक्ति, अमृतत्व की प्राप्ति होती है । यह ज्ञान जीवन का अन्तिम लक्ष्य है । इस सम्बन्ध में श्रुति की स्पष्ट घोषणा है, "इह चेद्वेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः । भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति ।" यदि आत्मसाक्षात्कार इस जीवन में प्राप्त हुआ तो "सत्यमस्ति" कल्याणप्रद है । यदि ऐसा न हुआ तो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महानाश है । ईश्वर दर्शन केवल अन्तर्मन में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जगत् में, प्रत्येक प्राणी में उस का दर्शन कर बुद्धिमान् मनुष्य मृत्यु के बाद इस संसार से विदा लेने पर अमृतत्व को प्राप्त करते हैं । आवागमन के चक्कर से मुक्त हो जाते हैं । इस प्रकार प्रस्तुत उपनिषद् के प्रथम दो खण्डों में ब्रह्म की सर्वव्यापक सत्ता की अनिर्वचनीयता के वर्णन के बाद तृतीय खण्ड में अग्नि आदि देवों की शक्ति के कर्षण की एक आख्यायिका के उदाहरण से ब्रह्म की सर्वशक्तिमत्ता का व्याख्यान है ।

देवासुर संग्राम में देव विजयी हुए, असुर पराजित । विजयी देव अपनी जय के अभिमान से मोहित हो इस विजय में ईश्वरीय शक्ति की महत्ता को भूल, अपनी शक्ति की महत्ता मान, अपने को सर्वशक्ति सम्पन्न मानने लगे । सर्वहित-साधक भगवान् देवों के अभिमान को दूर करने के लिए स्वयं यक्ष रूप धारण कर प्रकट हुए । अकस्मात् प्रकट हुए उस अज्ञात यक्ष को देख इन्द्र सहित सभी देवता स्तब्ध रह गए । यक्ष कौन है, यह जानने के लिए देवराज इन्द्र ने सर्वप्रथम अग्नि को फिर वायु को प्रेषित किया । यक्ष ने उनकी शक्ति परीक्षा करने के लिए उन के सन्मुख एक तिनका रख कर अग्नि से कहा इसे जलाओ । अपनी सारी शक्ति लगा कर भी अग्नि उस तिनके को जला न सका । वायु की भी यही दशा हुई । वह भी अपनी पूरी शक्ति लगा कर भी उस तिनके को उड़ा न सका । इन दोनों देवों की असफलता को देख, देवराज इन्द्र ने जब उस यक्ष को स्वयं जानना चाहा तो वह अन्तर्धान हो गया । यक्ष के स्थान पर इन्द्र देव ने एक परमसुन्दर स्त्री, उमा देवी के रूप में ब्रह्मविद्या को देखा । उस ने देवराज इन्द्र को बताया, "जिसे तुम ने 'यक्ष' के रूप में देखा वह 'यक्ष' नहीं स्वयं ब्रह्म थे । उन्होंने अग्नि और वायु की शक्ति का कर्षण कर तुम्हें यह बताया है कि संसार की प्रत्येक शक्तिमय वस्तु में उन्हीं की शक्ति है । तुम्हारी यह विजय उसी ब्रह्म की विजय है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं भी उसी ब्रह्म की शक्ति हूँ और उसी से प्रेरित हो तुम्हें ज्ञान देने को प्रादुर्भूत हुई हूँ ।" उमा देवी के इस उपदेश से इन्द्र देव का अभिमान नष्ट हुआ । देवों ने ब्रह्म की सर्वशक्तिमत्ता को स्वीकारा ।

यह आख्यायिका इस तथ्य को व्यक्त करती हैं कि ईश्वरीय शक्ति ही सर्वव्यापक एवं सर्वोपरि है । 'मैं-मेरे' का अभिमान निरर्थक एवं निराधार है । जब तक व्यक्ति में 'मैं' का अभिमान है तब तक वह ईश्वर दर्शन नहीं कर सकता । अभिमान अविद्या है ! अज्ञान का अन्धेरा है ! इसके रहते अन्तःकरण में ज्ञान का प्रकाश नहीं हो सकता । अविद्या का अन्धेरा मिटते ही व्यक्ति की शुद्ध चेतना ज्ञान के प्रकाश से जगमगा उठती है । सत्य की अनुभूति से अन्तःकरण अनिर्वचनीय आनन्द में निमग्न हो जाता है । उस पर अहैतुक कृपालु भगवान् की करुणा की अभिवृष्टि होती है । शरणागत रक्षक भगवान् अपने भक्त के अन्तःकरण में स्वयं स्थित हो, अज्ञान के अन्धेरे को मिटा कर ज्ञान के प्रकाश से सत्य का ज्ञान देते हैं । गीता में भगवान् श्री कृष्ण इस सत्य को उद्घोषित करते हुए कहते हैं, "तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञान दीपेन भास्वतः"*

अर्थ : जिन भक्तों का चित्त निरन्तर मुझ में लगा रहता है । जिन्होंने तन-प्राणों को मेरे अर्पण किया हुआ है ; उन पर अनुग्रह करते हुए, उन के अन्तःकरण में स्थित हो कर मैं स्वयं उनके अज्ञान जनित अन्धकार को ज्ञान के प्रकाशमय दीपक के द्वारा नष्ट कर देता हूँ ।

भक्तों के हितार्थ, परिस्थिति के अनुरूप भगवान् स्वयं अवतरित होते हैं । अभिमान के मद से मोहित देवों के अभिमान को दूर कर उन्हें ब्राह्मी शक्ति की सर्वव्यापकता एवं सर्वशक्तिमत्ता का ज्ञान देने के

*।।ग.अ१०श्लोक११।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिए यक्ष और उमा का आविर्भाव इसी सत्य का संकेत देता है । इस के अतिरिक्त कथा में आध्यात्मिक गूढ़ार्थ भी यक्षोपाख्यान के द्वारा अभिव्यंजित है । श्री अरविन्द के अनुसार वेद में "अग्नि की ज्वाला है, संकल्प की सप्तजिह्वा शक्ति, परमेश्वर की ज्ञान प्रेरक शक्ति ! वायु[2] प्राणिक बल की शक्ति जो शरीर में व्याप्त दिव्य शक्तियों की अभिव्यंजक है । इन्द्र[3] शक्तिशाली देव, शुद्ध सत् की शक्ति जो भागवत् मन के रूप में स्वतः अभिव्यक्त है ।"

इस कथा में "यक्ष" ब्रह्म का प्रतीक है जो अपनी दिव्य झलक से इन्द्ररूपी मन में ब्रह्म जिज्ञासा को उत्पन्न करता है । 'यक्ष' को जानने के लिए 'इन्द्र देव' का 'अग्नि' को प्रेषित करना, सर्व प्रथम मन में उठा ब्रह्म-ज्ञान प्राप्ति का संकल्प है । एतदर्थ वायु की नियुक्ति, ब्रह्म-साक्षात्कार के लिए प्राण शक्ति का उपयोग : प्राणायाम आदि साधनों को अपनाने का अभिव्यंजक है । अन्त में यक्ष के परिचय के लिए इन्द्र का स्वयं जाना, अभिमान त्याग कर ईश्वर के समक्ष साधक द्वारा सर्वभाव से आत्म समर्पण करने के भाव की अभिव्यक्ति है । इन्द्र को देख यक्ष का तिरोभाव साधक के हृदय में ब्रह्म-ज्योति के क्षणिक विभासित होने की लाक्षणिक व्यंजना है । उमा का प्रादुर्भाव अहैतुक कृपालु भगवान् द्वारा शरणागत के हृदय में सद्ज्ञान को उद्भूत करने का भाव है । इस प्रकार यक्षोपाख्यान पूर्णरूप से एक आध्यात्मिक संकेतात्मक कथा है ।

आत्मसाक्षात्कार के लिए साधना में संलग्न साधक की साधना सिद्धि के क्रमिक विकास को उपनिषत्कार ऋषि जिज्ञासु शिष्य को अधिदैवत एवं अध्यात्म आदेश की विधि के द्वारा बताते हैं ।

अधिदैवत आदेश के अनुसार साधना रत साधक को अपने हृदय में ब्रह्म ज्योति की झलक बादल में बिजली की चमक जैसी आँख

श्री अरविन्द कृत "वेद रहस्य (पूर्वार्द्ध) पृष्ठ सं० क्र० २७, ३४८, २८ से उद्धृत ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

झपकने के समान क्षण-भर के लिए दिखती है । अध्यात्म आदेश के अनुसार मनुष्य का मन जो प्रतिक्षण चलता सा लगता है, वह ईश्वरीय शक्ति का अवभास देता है । मानो मन प्रतिक्षण निरन्तर ईश्वर का स्मरण करता है । इस प्रकार ब्रह्म-ज्योति की क्षणिक चमक एवं मन का निरन्तर संकल्पमय होना ईश्वरीय सत्ता की प्रतीति का अवभास है ।

ऋषियों ने तपः, 'सत्संकल्प की पूर्ति के लिए धैर्य-पूर्वक कष्टों को सहना,' दमः, 'तन से मन से इन्द्रिय संयम', कर्मः, 'निस्वार्थ भाव से पर हित साधक कर्म' अंगों सहित वेदाध्ययन, 'परम सत्य का मनन एवं चिन्तन, वेदों का पठन पाठन, वेदों में बताये ज्ञान के अनुरूप आचरण', को ब्रह्म-ज्ञान रूपी भवन के आधार-भूत स्तम्भ और सत्य को ब्रह्म का भवन कहा है । उनका विश्वास है कि इन पाँच आधारों के बिना ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती और न ही ब्रह्म का प्राप्त किया हुआ ज्ञान हृदय में सर्वदा प्रतिष्ठित रह सकता है । धृतिशील, जितेन्द्रिय एवं सत्यव्रती व्यक्ति ही ब्रह्मज्ञान का अधिकारी है और उसी को ब्रह्मैकात्मता रूप मुक्ति मिलती है । अन्त में इस ग्रन्थ के अध्ययन का फल घोषित करते हुए वे कहते हैं जो व्यक्ति इस उपनिषद् के अनुसार आचरण करता है अर्थात् जिस व्यक्ति की दृष्टि में सभी जीव-जन्तु ब्रह्म स्वरूप हैं, और जो हर प्राणी को आत्मवत् प्यार करता है, वह अपने सब पापों का क्षय कर स्वर्गीय सुख एवं परम शान्ति को प्राप्त करता है । उसे हृदय में सर्वदा ब्रह्म की प्रतिष्ठा का अनुभव होता है ।

प्रस्तुत उपनिषद् संस्कृत से हिन्दी में अनूदित है । यह अनुवाद केवल शब्दों की अर्थात्मक अभिव्यक्ति नहीं । मैंने शब्द में अन्तर्निहित भाव को मुख्य रूप से व्यक्त करने का प्रयास किया है । सम्भवतः किन्हीं एक स्थलों के गूढ़ार्थ को समझने में मेरी बुद्धि सक्षम न रही हो अथवा अपनी भावनात्मकता से मैंने उन स्थलों का सामान्य अर्थ से थोड़ा हट कर अर्थ किया हो । "एकं सद् विप्राः बहुधाः वदन्ति"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उक्ति को ध्यान में रखकर इस अभिव्यक्ति के लिए विद्वज्जन मेरे प्रति क्षमा का भाव अपनायेंगे ।

डॉ० रामप्रताप, संस्कृत के परम विद्वान्, शब्द, अर्थ और उनमें निहित भाव के मर्मज्ञ, निगमागम के अध्येता एवं ज्ञाता हैं । मैंने इनसे अपनी इस कृति का आमुख लिखने का आग्रह किया तो उसे इन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया, मैं उस के लिए आप की आभारी हूँ और आपके इस अनुग्रह के लिए आपको हार्दिक धन्यवाद देती हूँ । अन्त में मैं उन परम ऋषियों को शत-शत नमन करती हूँ जिन्होंने वेदों और उपनिषदों का अपरिमेय ज्ञान-भण्डार विश्वकल्याणार्थ प्रदान किया है ।

नमः परम ऋषिभ्यः । नमः परम ऋषिभ्यः । नमः परम ऋषिभ्यः ।

ओम् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्ति !!!

वेद और उपनिषद् : विद्वानों के विचार :-

ऋचायें केवल प्रशस्तियाँ नहीं वरन् शक्ति सम्पन्न मंत्र हैं, जिनका उच्चारण मन की अनुकूल भावना के साथ किया जाता है ।

—स्वामी विवेकानन्द

वैदिक देवता, विश्वव्यापी देवता के नाम, शक्तियाँ और व्यक्तित्व हैं । वे किसी दिव्य सत्ता के, किसी विशेष सारभूत बल का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

—श्री अरविन्द

उपनिषद् दर्शन के, तर्क के ग्रन्थ नहीं, अनुभूति के साक्षात्कार के ग्रन्थ हैं ।

—डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आमुख

डॉ० रामप्रताप (राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त)
वेदालंकार एम० ए० पी एच डी (संस्कृत)
पूर्वाचार्य संस्कृत विभागाध्यक्ष, डीन
(आर्टस)
जम्मू यूनिवर्सिटी

मनुष्य एक चिन्तनशील प्राणी है। मननान् मनुष्यः अर्थात् मनन चिन्तन करने के कारण मनुष्य को मनुष्य कहा जाता है। मनन करने की यह विशेषता केवल मनुष्य में ही पाई जाती है अन्य प्राणियों में नहीं। इसी चिन्तन शक्ति के आधार पर मनुष्य ने ज्ञान, विज्ञान, कला, धर्म, दर्शन और संस्कृति के क्षेत्र में अधिकाधिक प्रगति की है। इसी चिन्तन के सहारे वैदिक और उपनिषत्कालीन भारतीय ऋषियों ने अपने भीतर पैठकर बुद्धि से परे जाकर ब्रह्मसाक्षात्कार किया। यही ब्रह्म था ईश्वर, जगत् की सम्पूर्ण सत्ता के पीछे रहने वाला परम सत्य। ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्--इस चलते फिरते परिवर्तनशील संसार में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है उस समस्त वस्तुजात में ईश्वर व्याप्त है इसका प्रतिपादन ईशोपनिषद् (ईशावास्योपनिषद् प्रथम मन्त्र) में किया गया है। यह सारा संसार एक कार्य है इसलिए इसका कोई न कोई कर्त्ता मानना चाहिए। उसी कर्त्ता को ब्रह्म, ईश्वर और अग्नि आदि नामों से कहा जाता है। जैसे घट का निर्माण कुम्हार और चित्र का निर्माण चित्रकार करता है वैसे ही इस जगत् की रचना वह परम शक्तिशाली प्रभु करता है। उसको योगसाधना के द्वारा पा लेना ही मनुष्य जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है।

हर जगह मौजूद है पर वो नज़र आता नहीं।
योगसाधन के बिना उसको कोई पाता नहीं।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपनिषद् का अर्थ है-समीप बैठना । जो विद्या गुरु के चरणों में बैठकर सीखी जाती है और जिसके सीखने से ब्रह्म की प्राप्ति हो जाती है वह उपनिषद् विद्या है । इसी कारण इसको ब्रह्मविद्या भी कहा जाता है । उपनिषदों के भीतर ब्रह्म के स्वरूप, उससे उत्पन्न जीवात्मा और जगत् के साथ उसका सम्बन्ध, ब्रह्मप्राप्ति के उपाय आदि विषयों का विस्तृत विवेचन किया गया है । इस जगत् की उत्पत्ति, स्थिति तथा लय के कारणभूत परम तत्त्व को ब्रह्म कहते हैं ; जिससे ये सारे मनुष्य और स्थूल पदार्थ उत्पन्न होते हैं ; उत्पत्ति के बाद जीवित रहते हैं और अन्त में जाकर उसमें लीन हो जाते हैं वही ब्रह्म है एवं उस ब्रह्म को ही जानने की प्रत्येक मनुष्य को जिज्ञासा रखनी चाहिए (तैत्तिरीय उपनिषद् ३१) जब मनुष्य के हृदय में स्थित सारी कामनायें समाप्त हो जाती हैं तब मनुष्य अमर हो जाता है और ब्रह्म को पा लेता है (कठोपनिषद् २, ३, १४) इन उपनिषदों में जिस अध्यात्म विद्या का निरूपण किया गया है वह इनके लिखने वाले ऋषियों के अपने चिन्तन, मनन और निदिध्यासन पर आधारित है । इनको न केवल अपने देश में ही मान-सम्मान प्राप्त हुआ है बल्कि विश्व के दूसरे देशों में भी इन्हें आदर मिला है । इसी का परिणाम है विगत दो हज़ार वर्षों में इनके ऊपर सैकड़ों टीकायें लिखी गई हैं । न्याय, वैशेषिक आदि भारतीय दर्शनों के प्रमुख सिद्धान्तों का आधार ये उपनिषदें हैं । इनमें वे ऊँची से ऊँची शिक्षायें मिलती हैं जिनसे प्रेरणा लेकर आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की उन्नति की जा सकती है । वेदों और ब्राह्मणादि ग्रन्थों की तुलना में उपनिषदों की विषय प्रतिपादन शैली अधिक सरल है । इनमें आत्मा और परमात्मा से सम्बद्ध गूढ़ विषयों को प्रश्नोत्तर शैली को अपनाकर स्पष्ट किया गया है । आध्यात्मिक और व्यावहारिक उभयविध जीवन में शुचिता और पवित्रता रखने का आग्रह किया गया है । उपनिषदों में आत्मतत्त्व, ब्रह्मतत्त्व

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और मोक्ष प्राप्ति के उपाय जैसे आध्यात्मिक विषयों की विवेचना करने के साथ-साथ मनुष्य जीवन के व्यावहारिक पक्ष की उपेक्षा नहीं की गई है । दाम्यत, दत्त, दयध्वम्-दमन (आत्मसंयम) करो, दान करो और दया करो (बृहदारण्यक उपनिषद् ५, २, १-३) जो व्यक्ति झूठ बोलता है वह जड़ समेत सूख जाता है अर्थात् पूर्णतया नष्ट हो जाता है (प्रश्नोपनिषद् ६, १) । इस प्रकार की शिक्षाओं को जीवन में अपनाकर मानव का सर्वाङ्गीण विकास स्वतः हो जाता है । इस विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय संस्कृति को आदर्शोन्मुखी, अन्तर्मुखी और धर्मप्राणा बनाने में उपनिषदों का महत्त्वपूर्ण योगदान है । इन महनीय ग्रन्थों के अनुवादों और पद्यानुवादों से इनमें प्रतिपादित गूढ़ तत्त्वों को समझने में बड़ी सहायता मिलती है । ईशावास्योपनिषद् (ज्योतिर्गमय) कठोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद् और केनोपनिषद् का पद्यानुवाद करके विदुषी आचार्या शकुन्तला सेठ ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है ।

ईशावास्यमिदं सर्वम् (ईशावास्योपनिषद्) यह सम्पूर्ण विश्व ईश्वर से व्याप्त है इसका हृदयग्राही अनुवाद इस प्रकार किया हुआ है--

ईश्वर जग में जड़ चेतन में,
बसा हुआ है हर ज़र्रे में,
मणियों में अनुस्यूत सूत सा,
तन में रमे हुए प्राणों सा ।

ओम् सहनाववतु तथा मा विद्विषावहै (कठोपनिषद्) में गुरु शिष्य का पारस्परिक सद्भाव दृष्टिगोचर होता है--

विनती है प्रभु आपसे जोड़ के दोनों हाथ ।
रक्षा गुरु अरु शिष्य की करो सदा इक साथ ।।
प्रेमभाव से पूर्ण हो हम दोनों का चित्त ।
कभी द्वेष न हम करें तुच्छ स्वार्थ निमित्त ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रातःकाल सूर्य उदित होकर अवनी और आकाश दोनों में प्राणों का आधान कर देता है । (अथादित्य उदयन् प्राचीं दिशं प्रविशति- प्रश्नोपनिषद् ६)

उदयकाल में सूर्य प्रभा जब,
पूर्व दिशा आलोकित करती ।
उमड़े चेतनता अम्बर से,
छलके जीवन उमग धरा पर ।।

केनोपनिषद् में ब्रह्म की अगोचरता एवं अनिर्वचनीयता ("न तत्र चक्षुर्गच्छिति", "यद्वाचानभ्युदितम्" केनोपनिषद् १-४) का प्रतिपादन जितने सुन्दर ढंग से किया गया है उतना ही सौन्दर्य इसके पद्यानुवाद में देखने को मिलता है--

"ब्रह्म अगोचर अविज्ञेय है
इन्द्रियाँ उस तक पहुँच सकें ना ।
आँखों से उसके स्वरूप को--
देख सका न कोई कभी है ।"
"वाणी से वर्णन हो कैसे
देखा सुना न उसे किसी ने ।
वाणी से वर्णन न जिसका,
वर्णन हो जिसकी शक्ति से ।
सर्वसृष्टि का कर्त्ता भर्त्ता
परब्रह्म वह शक्तिमान् है ।

यह केनोपनिषद् की पद्यमयी रचना विदुषी एवं कवयित्री अनुवादिका शकुन्तला सेठ की प्रौढ एवं ललित रचना है । केनोपनिषद् का अनुवाद करते-करते वह अपने आपको भूलकर इस उपनिषद् के रंग में इतनी रंग जाती हैं कि वे स्वयं ही ब्रह्म के स्वरूप के विषय में प्रश्न और उनके उत्तर निर्माण करने लग जाती हैं । अपनी प्रश्न-उत्तर कविता में वे प्रश्न करती हैं--

प्रश्न-- कौन धरा पर करे रंगोली,
टांके कौन गगन तारे ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौन चितेरा चित्रित करता,
सागर पर्वत नद नारे ?
कौन बहारों के रंगों से,
चमकाये धरती मुखड़ा ?
कौन नहाकर चन्द्र ज्योति में,
छिटकाये तारक मुक्ता ?
कौन बिगाड़े रूप धरा का,
लिए सुनामी लहरों को ?
कौन धधका भीषम ज्वाला,
कम्पाये धरती मां को ?
उत्तर-- रचा विधाता ने सृष्टि का,
रंगमंच निज हाथों से।
उसपर नाचे प्रकृति नर्तकी,
विविध भाव मुद्राओं में।
कभी रुद्र रूप धर नाचे,
बनती काली विकराला।
कभी नाचती राधा बनकर,
मुरलीधर की ब्रजबाला।
एक देवता वह ही बसता,
बाह्य जगदन्तस्तल में।
देखो उसको अन्तर्मन में,
बाह्य सृष्टि की रग-रग है।

अपने इन पद्यानुवादों में विदुषी अनुवादिका ने उपनिषदों के भीतर विद्यमान मूलभावों को सर्वत्र अक्षुण रखा है क्योंकि यह पद्यानुवाद शब्दानुवाद न होकर भावानुवाद हैं इसलिए इनकी कविता मौलिक कविता बन गई है। उपनिषदों की भाँति ही सरल शैली और प्रसादगुण से ओतप्रोत है। विषयगाम्भीर्य होते हुए भी सब कुछ सरल और स्पष्ट रूप से प्रकट करना निश्चय ही कवि के लिए बहुत बड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपलब्धि है । भारतीय काव्यशास्त्र की दृष्टि से यदि केनोपनिषद् के इस पद्यानुवाद का मूल्याङ्कन किया जाय तो इसमें अद्भुत रस के उदाहरण स्थान-स्थान पर देखे जा सकते हैं । इस रस को ओज, प्रसाद, माधुर्यगुणों तथा उपमादि अलङ्कारों ने परिपुष्ट किया है । केनोपनिषद् में दिये पद्यों का जो उन्होंने भावानुवाद किया है उसमें तो अनुवादिका अपने को बंधी और सीमित अनुभव करती हैं परन्तु सम्पूर्ण चतुर्थ खण्ड की व्याख्या में उनका कवि हृदय स्वतंत्र होकर दौड़ने लगता है ।

ब्रह्मज्ञान का मार्ग कठिन है,
छुरिका धार सदृश दुस्तर है ।
उस पर चलते यती तपस्वी,
ब्रह्मपरायण मुनि मनस्वी ।
शम दम क्षान्ति धृति तितिक्षा,
ब्रह्म भवन के दृढ़ खम्भे हैं ।
इन खम्भों पर ही स्थिर रहता,
ब्रह्मज्ञान का भव्य भवन है ।
एक बार जिस को भा जाती,
इस प्रसाद की भव्य भव्यता ।
तुच्छ है दिखती उस मानव को,
सरल सृष्टि की सर्व सम्पदा ।
सकल शोक नष्ट हों उसके,
आशा तृष्णा की विरति से ।
अनासक्त मन निर्मल दर्पण,
दिखता उसमें ब्रह्म निरंजन ।
अहंकार का झीना पर्दा,
ढके हुए है ब्रह्म का मुखड़ा ।
उसे हटा दो रूप दिखेगा,
शिवसुन्दर उस परम सत्य का ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस स्थल पर प्रयुक्त रूपकों से अद्भुत रस की परिपुष्टि हो रही है । साथ ही यह रस सहृदय के चित्त में चमत्कार को उत्पन्न कर रहा है इसलिए ये रूपकानुप्राणित अद्भुत रसचमत्कार के स्वाभाविक, मार्मिक और आह्लादक उदाहरण हैं ।

आचार्य क्षेमेन्द्र ने कहा है न हि चमत्कारविरहितस्य कवेः कवित्वम् काव्यस्य वा काव्यत्वम् (कविकण्ठाभरण ३, १ वृत्ति) जो कवि चमत्कार रहित हो वह कवि नहीं और जिस कविता में चमत्कार न हो वह कविता नहीं । इसी प्रकार धर्मदत्त और नारायणदास आचार्य का मत दिखाते हुए विश्वनाथ का कहना है, रस में सार चमत्कार है और वह सर्वत्र शृंगारादि रसों में अनुभव किया जाता है । उस चमत्कार रूप स्थायिभाव के होने पर सर्वत्र शृंगारादि रसों में अद्भुत रस है इसलिए अद्भुत ही एक मात्र रस है । नारायण दास ने ही कहा है चमत्कार ही सारे रसों का प्राणभूत रस है अन्य रस इसी के भेद हैं । (साहित्यदर्पण ३, ३ वृत्ति तथा अनन्तदास कृत लोचनटीका) इसी प्रकार क्षेमेन्द्र, नारायण, अनन्तदास और विश्वनाथ इन चारों आचार्यों ने अद्भुत रसजन्य चमत्कार को ही काव्य की कसौटी माना है । इस कसौटी पर जब हम आचार्या शकुन्तला सेठ की इन भाव भरी हिन्दी कविताओं को परख कर देखते हैं तो न केवल वे खरी उतरती हैं अपितु सहज ही पण्डितराज जगन्नाथ प्रोक्त उत्तमोत्तम काव्य की श्रेणी में आ जाती हैं । सबसे बड़ी बात यह है कि ये कवितायें ब्रह्म को विषय बनाकर लिखी गई हैं । यदि विषय उदात्त हो तो कवि का उदात्त होना स्वाभाविक हो जाता है--

राम तुम्हारा चरित स्वयं एक काव्य है ।
कोई कवि बन जाय सहज सम्भाव्य है ।

केनोपनिषद् का यह पद्यानुवाद स्वयं एक मौलिक कृति जैसा बन गया है । आचार्या शकुन्तला सेठ ने सरसिज, समयधारा, उजास और ज्योतिकण जैसी दूसरी भी मौलिक कृतियाँ लिखी हैं । उनकी तरह इसमें भी मौलिकता है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसे स्तुत्य प्रयास के लिए उन्हें हम सबकी ओर से पुनः पुनः बधाई है । हमें आशा है कि वे आगे भी अपनी इस साधना को जारी रखेंगी ।

उपनिषदों में दान की महिमा बताई है । आचार्या शकुन्तला जी की विद्यादान और जीवनदान में स्वाभाविक रुचि है । अपनी पहली रुचि को साकार बनाने के लिए इन्होंने विद्यापीठ हाई स्कूल की स्थापना की और उसको ४५ वर्षों तक सफलतापूर्वक चलाया । आपने अध्यापन के साथ अपने जीवनदान के नियम को बनाये रखा । आजन्म ब्रह्मचारिणी रहकर देश सेवा और साहित्य सेवा में समर्पित भाव से सारा जीवन लगा दिया । 'उषा' नामक हिन्दी मासिक पत्रिका का सम्पादन किया । इनका सदैव आशावादी दृष्टिकोण रहा है । इसके साथ ही साथ उत्तम आदर्शों की प्राप्ति के लिए त्याग और बलिदान की भावना को लेकर चलती रही हैं । इनकी अपने जीवन के बारे में कुछ ऐसी सोच है--

शमा की भाँति जलकर यहाँ तक तो चले आये ।
उजाला करते जायेंगे रहेंगे हम यहाँ जब तक ।।

मैं अन्त में इनके दीर्घायुष्य एवं सुस्वास्थ्य के लिए कामना करता हूँ ।

कृत्वा मङ्गलकर्माणि या याति कृतकृत्यताम् ।
शकुन्तलाभिधादेवी जीव्यात् सा शरदां शतम् ।।

१५/२ त्रिकूटा नगर जम्मू तवी — रामप्रताप
२४-११-२०१०

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ॐ

केनोपनिषद्

पद्यात्मक हिन्दी अनुवाद

शान्ति पाठ

मन्त्र : ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक् प्राणश्चक्षुः ।
श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि ।।
सर्वं ब्रह्मौपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म
निराकरोत् । अनिराकरणमस्त्वनिराकरणं
मेऽस्तु । तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते
मयि सन्तु ते मयि सन्तु ।
ॐ शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

अर्थ : तन के सभी अंग हे भगवन् !
हृष्ट पुष्ट हों शक्तिशाली ।
नाक कान प्राण वा आँखें,
तेरे तेज से हों परिपूरण ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर्म-इन्द्रियाँ वाणी सहित सब,
ओज वीर्य से हों संचालित ।
तेरा तेज व्याप्त हो इन में,
गतिशील हों तव शक्ति से ।

भूलूँ कभी न मैं ईश्वर को,
ईश्वर कभी न भूले मुझको ।
जो स्वरूप ब्रह्म का वर्णित,
वेदों में उपनिषदों में है-

उस का चिन्तन सदा करूँ मैं,
रहूँ सदा उस भाव से भावित ।
शाश्वत हो सम्बन्ध ब्रह्म से,
अनन्य भाव हो मेरा उस में ।

उस की दया-दृष्टि की वर्षा,
मुझ पर बरसे नित्य निरन्तर ।
उस का सदा करूँ मैं चिन्तन,
वेदों के अनुकूल हो जीवन ।

ईश दया से नष्ट हों सारे, दैहिक दैविक भौतिक ताप ।
हृदय शुद्ध हो मन हो निर्मल, रोग रहित तन हो निष्पाप ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ॐ

प्रथम खण्ड

शिष्य का गुरु से प्रश्न :-

कौन प्रेरक ?

मन्त्र १ : ॐ केनेषितं पतति प्रेषितं मनः ।
केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः ।
केनेषितां वाचमिमां वदन्ति,
चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति ।।

अर्थ : किस से प्रेरित हो यह प्राणी,
गतिशील है कर्म निरत है ?
कौन है करता प्रेरित मनको,
विषयों के रस की रसता में ?

किसी हठीले बालक सा मन,
किस से प्रेरित हो कर मचले,
विषयों का रस लेने हेतु,
अन्त दुखद जो क्षणिक सुखद हैं ?

रूप दरस को तरसें आँखें,
कान तरसते शब्द श्रवण को ।
किस का ओज तेज व्याप्त है,
अंग अंग में रोम रोम में ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किस की शक्ति से संचालित,
तन की मन की सभी क्रियाएँ ?
प्राणों में स्पन्दन है किस से ?
किस शक्ति से बोले वाणी ?

कौन जोड़ता सभी इन्द्रियाँ,
उन के अभिवाँछित विषयों से ?
कैसे श्वसन क्रिया होती है ?
कैसे घ्राण गंध को लेता ?

आँखें देखें किस शक्ति से ?
कर्ण श्रवण करते हैं कैसे ?
कौन बनाता जड़ को चेतन ?
तन में चेतनता है किस से ?

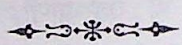

गुरु का उत्तर :-

"आत्मा सर्वनियन्ता"

मन्त्र २ : श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो
यद्वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य
प्राणश्चक्षुषश्चक्षुरति मुच्य धीराः
प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति ।।

अर्थ : कानों का भी है जो कान,
सुने कान जिस की शक्ति से ।
मननशील मन का जो मन है,
मन से मनन जिस की शक्ति से ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाणी की भी है जो वाणी,
बोले वाक् जिस की शक्ति से ।
वह प्राणों का प्राण विभु है,
वही चक्षु का भी है चक्षु ।

वह ब्रह्म है सर्वशक्तिमय,
वह भूमा है अन्त रहित है ।
उसे जान कर धृतिशील नर,
मर्त्यलोक तज जब जाता है,

प्राप्त उसे हो अमर अभय पद,
मिलती भव-बन्धन से मुक्ति ।

व्याख्या : देखे आँख जिस की शक्ति से,
शब्द श्रवण करते हैं कान,
तन को देता जो है चेतना,
वह सर्वात्म निर्विशेष है ।

शक्तिमान् वह महादेव है,
बसा हुआ वह हर प्राणी में ।
भीतर बाहर तन प्राणों में,
अन्तर्मन में बाह्य जगत् में ।

वाणी में है जिस की शक्ति,
आँख कान में जिस का बल है ।
प्राणों में स्पन्दन है जिस से,
अंग-अंग में गति है जिस से ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्योतिर्मय वह ज्योति सागर,
हर ज्योति में ज्योति उस की ।
वह ब्रह्म है प्राण, प्राण का,
जीवन है वह सब जीवों का ।

वही जगाता इन्द्रियों में है,
तृषा विषय भोगों की नित नव ।
तन में मन में स्थिति धृति है,
उसी ब्रह्म के शक्ति अंश से ।

वही ज्ञेय है ज्ञान-गम्य है,
उसे जान कर धीर मनस्वी ।
माया बँध छुड़ा जीवन में,
मुक्ति पाते बाद मृत्यु के ।

जन्म-मरन का कटता बँधन,
मिलता उन को अमर अभय पद ।
शाश्वत शान्ति की उपलब्धि-
होती ब्रह्मैकात्मता से ।

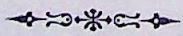

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्म अज्ञेय है

मन्त्र ३ :न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति
नो मनो न विद्मो न विजानीमो
यथैतदनुशिष्यादन्यदेव तद्विदितादथो
अविदितादधि ।
इति शुश्रुम पूर्वेषां ये नस्तद्व्याचचक्षिरे ।।

अर्थ : ब्रह्म अगोचर अविज्ञेय है,
इन्द्रियाँ उस तक पहुँच सकें ना ।
आँखों से उस के स्वरूप को,
देख सका न कोई कभी है ।

वाणी से वर्णन हो कैसे,
देखा सुना न उसे किसी ने ।

मन से मनन न उस का होता,
बुद्धि उस तक पहुँच न पाये ।
बता सके न उस को कोई,
स्वयं कोई भी जान सके न ।

ज्ञाता वक्ता श्रोता उसका,
इस जगती में कोई नहीं है ।

पृथिवी-तल के सभी पदारथ,
जाने अनजाने हैं जितने ।
उस का साम्य नहीं हैं रखते,
वह अतीन्द्रिय अत्यद्भुत है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूर्व काल के ऋषि-मुनियों से,
कहा हमारे लिए जिन्होंने,
ऐसा हमने सुना हुआ है,
ब्रह्म इन्द्रियातीत विषय है ।

ब्रह्म इन्द्रियातीत है

मन्त्र ४ : यद्वाचानभ्युदितं येन वागभ्युद्यते,
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ।

अर्थ : वाणी से वर्णन न जिस का,
वर्णन हो जिस की शक्ति से ।
सर्व सृष्टि का कर्त्ता-भर्त्ता,
परब्रह्म वह शक्तिमान् है ।

वर्णन के जो विषय पदारथ,
वाणी वर्णन करती जिनका ।
ब्रह्म नहीं वे हो सकते हैं,
ब्रह्म अवर्ण्य है अत्यद्भुत है ।

पूर्वकाल के ऋषि-मुनियों से,
कहा हमारे लिए जिन्होंने,
ऐसा हमने सुना हुआ है,
ब्रह्म वर्णनातीत विषय है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन्त्र ५ : यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम् ।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ।

अर्थ : मनन न मन कर सकता जिसका,
होता मनन जिस की शक्ति से ।
वह अचिन्त्य नियामक शक्ति,
परब्रह्म वह शक्तिमान् है ।
चिन्तन के जो विषय पदारथ,
मन कर सकता चिन्तन जिनका ।
ब्रह्म नहीं वे हो सकते हैं,
ब्रह्म अचिन्त्य है शक्तिमान् है ।
पूर्व काल के ऋषि मुनियों से,
कहा हमारे लिए जिन्हों ने,
ऐसा हमने सुना हुआ है,
ब्रह्म अचिन्त्य है अविज्ञेय है ।

मन्त्र ६ : यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूँषि पश्यति
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ।

अर्थ : आँखें जिस को देख न सकतीं,
आँख में दृष्टि जिस शक्ति से ।
वह अरूप वह चेतन सत्ता,
परब्रह्म वह शक्तिमान् है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दरशन के जो विषय पदारथ,
जिन्हें देखते जन जगती के ।
ब्रह्म नहीं वे हो सकते है,
ब्रह्म अदृश् है अत्यद्भुत है ।

मन्त्र ७ : यच्छ्रोत्रेणनशृणोति येन श्रोत्रमिदँ श्रुतम् ,
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ।

अर्थ : कानों से जो सुना न जाता,
सुने कान जिस की शक्ति से ।
श्रोता वक्ता ज्ञानरूप जो,
परब्रह्म वह शक्तिमान् है ।

सुनने के जो विषय पदारथ,
सुनते जिन को जन जगती के ।
ब्रह्म नहीं वे हो सकते हैं,
ब्रह्म अश्रव्य अविज्ञेय है ।

पूर्वकाल के ऋषि-मुनियों से,
कहा हमारे लिए जिन्हों ने,
ऐसा हमने सुना हुआ है,
ब्रह्म अश्रव्य अविज्ञेय है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन्त्र ८ : यत्प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः प्रणीयते ।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ।

अर्थ : प्राण-वायु दे गति ना जिसको,
प्राण-वायु में गति है जिस से,
जीवन दायिनी ब्राह्मी है वह ।
परब्रह्म की ही है शक्ति ।

जग में जितने भी हैं प्राणी,
जिन्हें पूजते जन जगती के ।
ब्रह्म नहीं वे हो सकते हैं,
ब्रह्म है चिन्मय चेतन सत्ता ।

पूर्व काल के ऋषि-मुनियों से-
कहा हमारे लिये जिन्हों ने,
ऐसा हमने सुना हुआ है,
ब्रह्म चिदानन्द चिति रूप है ।

व्याख्या : जगती के जन वस्तु देखते,
वस्तु का रंग रूप देखते ।
नहीं दीखती उन मनुजों को,
अन्तर्निहित वस्तु की शक्ति ।

सभी इन्द्रियाँ विषयों सहित हैं,
जिस शक्ति से लक्षित होतीं ।
जो संचालित करती सब को,
जिस से नियंत्रित सारी सृष्टि ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर्वत शिखरों सहित धरा को,
थर्रा देती अनायास ही ।
तुफाँ में जो भरे उफनता,
तट में बाँधे सागर लहरें ।

धरती के सीने में ढक कर,
रखती है जो आग धधकती ।
वह ब्रह्म की ही शक्ति है,
पूर रही जो सारी जगती ।

सब जन कहते आँख देखती,
कान शब्द श्रवण करते हैं ।
मन में उठती इच्छाओं को-
सभी मनुज अनुभव करते हैं ।

नहीं जानते उस चेतन को,
देता जो आँखों को दृष्टि ।
कर्ण इन्द्रिय में जो भरता,
शब्द श्रवण करने की शक्ति ।

मन के अन्तर में जो रखता,
अक्षय कोष तृषित भावों का ।
करता जब उद्घाटित उनको,
अकुला देता तन-प्राणों को ।

यह आकुलता मन की सिहरन,
सब प्राणी हैं अनुभव करते ।
पर न देख पाते हैं उसको,
जो है प्रेरक अन्तर्मन का ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वही ब्रह्म है शक्तिमान् है,
वह अज्ञेय अनुभूति गम्य है ।
वह अतीन्द्रिय पूर्ण तत्त्व है ।
वह भूमा है अन्त रहित है ।

उसे जानते उसे देखते,
अन्तर्मन की दिव्य दृष्टि से ।
आत्म-ज्योति के प्रकाश से,
धीर मनस्वी यती तपस्वी ।

परमानन्द उन्हें जीवन में,
बाद मृत्यु के उनको होती-
ब्रह्मैकात्मता उपलब्धि,
शाश्वत शान्ति परमगति की ।

प्रथम खण्ड समाप्त

विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं,
ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः ।।

श्वेताश्वतरोपनिषद् अ०४मं०१६

अर्थ : सब भूतों में अन्तर्यामी रूप से स्थित, परमपुरुष परमात्मा के ज्ञान से मनुष्य सभी माया बँधनों से मुक्त हो जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्ञात नहीं अज्ञात नहीं वह,
वह महिमामय महामहिम है ।
जाने इस अनुभूति को वह,
हुआ जिसे आतम अनुभव है ।

आत्म-अनुभूति का स्पष्टीकरण :-

मन्त्र ३ :यस्यामतं तस्य मतं, मतं यस्य न वेद सः ।
अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम् ।।

अर्थ : जो जन अपने आप को माने,
ब्रह्म विज्ञाता पण्डित-मानी ।
वह अज्ञानी अभिमानी है,
वह विज्ञाता नहीं ब्रह्म का ।
जो कहता है ब्रह्म अज्ञेय है ।
वह इन्द्रियातीत विषय है ।
वही है परम सत्य विज्ञाता,
वही है परम तत्त्व विज्ञानी ।
ज्ञाता को वह अविज्ञात है ।
अविज्ञाता को वह ज्ञात है ।

संक्षिप्त सार :

ब्रह्म ज्ञान का मान जिन्हें है,
वे ब्रह्म को नहीं जानते ।
जो कहते हैं वह अज्ञेय है,
वे विनम्र वे ज्ञानवान् हैं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्म अज्ञेय है अनामय है ।
वह सूक्ष्म से अति सूक्ष्म है ।
अपनी महिमा को वह जाने,
अन्य न कोई उसे पहचाने ।
वह अज्ञेय है अगम अगोचर,
वह भूमा है अन्त रहित है ।

विद्या से आत्म साक्षात्कारः-

मन्त्र ४ : प्रतिबोध विदितं मतममृतत्वं हि विन्दते ।
आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽ मृतम् ।।

अर्थ : ब्रह्म अज्ञेय है मन बुद्धि से,
निराकार वह ज्ञान गम्य है ।
विद्या से अज्ञान मिटाकर,
साधक जाने ब्रह्म तत्त्व को ।
आत्म-ज्योति के प्रकाश से,
पाये मुक्ति भव बंधन से ।
दिखे ब्रह्म उसे कण-कण में,
अन्तर्मन में बाह्य जगत् में ।
यही ज्ञान है, आत्म-तत्त्व का,
मिले इसी से अमृत ईश्वर ।

व्याख्या : भौतिक विषयों के समान न,
हो सकता है ज्ञान ब्रह्म का ।
मन प्राणों के सहित इन्द्रियाँ,
सीमा बद्ध हैं नाशवान् हैं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस अविनाशी भूमा को ये,
देख सकें न जान सकें न ।
विद्या के प्रकाश से जब है,
मिट जाता अज्ञान अँधेरा ।
जीवन में ही उस साधक को,
परमशान्ति की हो अनुभूति ।

अनुभव होता परब्रह्म का
अन्तर्मन में बाह्य जगत् में ।
ब्रह्म व्याप्त है इस जगती के-
हर ज़र्रे में अणु-अणु में ।
यही ज्ञान है मिले इसी से,
मुक्ति अमरता शाश्वत शान्ति ।

आत्म ज्ञान बिना विनष्टि :-

मन्त्र ५ :इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्
महती विनष्टिः
भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता
भवन्ति ।

अर्थ : मानव तन यह अति दुर्लभ है,
धर्म कर्म का यह साधन है ।
इस को पाकर यदि न जाना,
परब्रह्म मुक्ति दाता को ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्यर्थ यह जीवन परमविनष्टि,
फिर न मिलेगी मूरख मनवा ।
दुख रूप भव बँध से मुक्ति,
भटके योनि लाख चौरासी ।

अणु-अणु में हर प्राणी में,
पाकर दरशन सर्वेश्वर का ।
बाद मृत्यु के मिलती मुक्ति,
साधक पाता अभय अमरता ।

व्याख्या :देव पितर गंधर्व योनियाँ,
तिर्यक् जन्तु पशु पक्षी सब ।
भोग योनियाँ जिन में भोगे,
जीव कर्मफल सुखों दुखों में ।

केवल एक है मानुष योनि,
जिस में मानव निज कर्मों से ।
कर सकता उद्धार स्वयं का,
काट सके माया का बँधन ।

ऐसा मानव तन पा कर भी,
यदि मुक्ति का यत्न किया न ।
आत्महंता हो वह जाये,
अन्ध तमस की अधोगति को ।

भटके अनगिण योनियों में जा,
होता आवागमन निरन्तर ।
हँसता रोता बालक के सम,
झूला झूले ऊँचे नीचे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घूमे भव-सिंधु भँवरों में,
अहंकार नौका में चढ़ कर ।
आशा तृष्णा की दल-दल में,
धँसता जाये नीचे नीचे ।

ईर्ष्या राग द्वेष रोगों की,
सहे भयंकर अतिशय पीड़ा ।
अहंता ममता का सम्बल ले,
चाहे भव से पार उतरना ।

मूरख मानव देख ध्यान से,
जिन करमों से मिला है बँधन ।
मुक्ति भी उन से ही मिलेगी,
जन्म-मरन के आवर्त्तन से ।

कर्मों के फल की आशा ही,
जीव को बाँधे भव बँधन में ।
फल की आशा त्याग से पाये,
जीव यह मुक्ति भव बन्धन से ।

बीज नष्ट होता कर्मों का,
स्वार्थ त्याग भट्टी में तप कर ।
ज्यूं धान का बीज नष्ट हो,
अग्नि की ज्वाला में जल कर ।

स्वार्थ रहित कर्मों के अंकुर,
नहीं फूटते भुने धान से ।
ना ही ये कारण बनते हैं,
विविध योनियों में जाने के ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वार्थ रहित कर्म से होता,
जब मानव का निर्मल अन्तर ।
होती ब्रह्म अनुभूति हृदय में,
ब्रह्म भाव हो हर प्राणी में ।

द्वैत भाव मिट जाता मन से,
आत्म भाव हो सब जीवों में ।
घृणा द्वेष नष्ट हो जाते,
समता जगे ईश चिन्तन से ।

पर की पीड़ा अपनी पीड़ा,
पर के सुख में निज सुख पाये ।
मिले आनन्द पर सेवा से,
देख दुखी को करुणा उमड़े ।

ऐसा मानव ही पाता है,
एक-रूपता परब्रह्म की ।
बाद मृत्यु के उसको मिलती,
अभय अमरता शाश्वत शान्ति ।

माया बन्धन उस मानव के,
कट जाते हैं जीवन में ही ।
विचरे मुक्त सदा जगती में,
शान्त मनः वह रहे विरति में ।

द्वितीय खण्ड समाप्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तृतीय खण्ड

यक्षोपाख्यान :-

देवताओं का अहम्

मन्त्र १ : ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये
तस्य ह ब्रह्मणो विजये,
देवा अमहीयन्त त ऐक्षन्तास्माकमेवायं
विजयोऽस्माकमेवायं महिमेति ।।

अर्थ : देवों और दानवों में था-
हुआ युद्ध विस्मयकारी ।
जीते देव पराजित दानव,
हर्षामर्ष हुआ भारी ।

अहंकार मद मस्त देव वे,
भूल गए सर्वेश्वर को ।
जिस की शक्ति घुमा रही है,
वातचक्र सम सृष्टि को ।

महिमा-मण्डित मान स्वयं को,
देव हुए मदमाते से ।
अपनी महिमा की वे गाथा,
बार - बार दोहराते थे ।

यह देवों की विजय नहीं थी,
जय थी उस परमेश्वर की ।
भूल उसे थे देव मानते,
जीत निजी बल पौरुष की ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देव तो उस का यन्त्र मात्र थे,
चालक थी भूमा शक्ति ।
जिस से होती है संचालित,
एक-एक रग जगती की ।

यक्ष का प्रादुर्भाव

मन्त्र २ :तद्धैषां विजज्ञौ तेभ्यो ह प्रादुर्बभूव,
तन्न व्यजानत किमिदं यक्षमिति ।

अर्थ : देवों के उस अहंकार को-
जान लिया परमेश्वर ने ।
शिक्षित करने उन मूढ़ों को,
स्वयं यक्ष बन प्रकट हुए ।

अवलोकन कर दिव्य यक्ष का,
स्तब्ध चकित वे देव हुए ।
कौन यक्ष यह ! कौन यक्ष यह !
विस्मित हो वे सब बोले ।

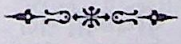

अग्नि की शक्ति परीक्षा

मन्त्र ३ :तेऽग्निमब्रुवञ्जातवेद एतद्विजानीहि,
किमिदं यक्षमिति "तथेति" ।

अर्थ : कहा सभी ने अग्नि देव से,
"जातवेद ! जाओ देखो ।
कौन देव यह दिव्य रूप है,
इस का ओज वीर्य परखो ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन्त्र ४ :तदभ्यद्रवत् तमभ्यवदत्
कोऽसीत्यग्निर्वा अहमस्मीत्यब्रवीज्
जातवेदा वा अहमस्मीति ।।

अर्थ : "तथाऽस्तु" कह अग्नि देवता,
पास यक्ष के जा पहुँचे ।
हाथ जोड़कर किया निवेदन,
"कौन आप हो देव कहें ।"

प्रत्युत्तर में कहा यक्ष ने,
"पहले दो अपना परिचय ।"
"मैं अग्नि हूँ, जातवेद हूँ,"
तड़क तमक अग्नि बोले ।

मन्त्र ५ : तस्मि ँस्त्वयि किं वीर्यमित्यपीद ँसर्वं
दहेयं यदिदं पृथिव्यामिति ।

अर्थ : पुनः यक्ष ने कहा, "बताओ,
ओज तेज बल अपना तुम ।"
अग्नि बोला, "जातवेद हूँ,
ज्ञाता हूँ सब द्रव्यों का ।

मेरी सात जिह्वाओं में,
है अद्भुत दाहक शक्ति ।
भस्मीभूत मैं कर सकता हूँ,
पल भर में सारी सृष्टि ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गर्व-वचन सुन कर अग्नि के,
हँसा यक्ष मन अपने में ।
बोला, "ओज वीर्य तो ऐसा,
देखा सुना न सपने में ।"

मन्त्र ६ : तस्मै तृणं निदधावेतद् दहेति,
तदुपप्रेयाय सर्व जवेन तन्न शशाकदग्धुं
स तत एव निववृते । नैतदशकं विज्ञातुं
यदेतद् यक्षमिति ।।

अर्थ : आगे रख इक तिनका उसके,
कहा, 'करो तुम भस्म इसे ।'
अगनी पूर्ण शक्ति से भभका,
वह तिनका न जला उस से ।

लज्जित हो आँखे कर नीची,
भागा अगनी त्वरित गति ।
बोला जा कर इन्द्र देव से,
यक्ष है वह अद्भुत शक्ति ।

वह है कोई दिव्य देवता,
उस की महिमा है महती ।
नहीं जान पाया मैं उसको,
कौन पुरुष वह महामति ।

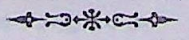

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सम्बन्ध दोहा :- जाने बिन जब यक्ष को, लौटे अग्नि देव ।
पड़े सोच में देवता, पाने उस का भेद ।।

वायु की शक्ति परीक्षा

मन्त्र ७ :अथ वायुमब्रुवन् वायवेतद् विजानीहि किमेतद् यक्षमिति तथेति ।।

अर्थ : कर विचार उन देवों ने तब,
कहा वायु से, "महामहिम !
पास यक्ष के जायें सत्वर,
सुलझायें सब की उलझन ।
आप है ज्ञाता सब जीवों के,
अन्तर्मन के बाहर के ।
आप समर्थ हो ज्ञात करन को,
कौन पुरुष यक्ष है यह ।"

मन्त्र ८ :तदभ्यद्रवत् तमभ्यवदत् कोऽसीति वायुर्वा अहमस्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वा वा अहमस्मीति ।

अर्थ : जैसी आज्ञा कह कर वायु,
बड़े गर्व से खड़ा हुआ ।
कहा यक्ष से, "दिव्य देव हे !
कौन आप हैं महामना ।"
प्रत्युत्तर में कहा यक्ष ने,
"पहले दो अपना परिचय ।"
"मैं वायु हूँ पवन देवता,
मातरिश्वा भी कहें मुझे ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन्त्र ६ :तस्मि ँस्त्वयि किं वीर्यमित्यपीद ँसर्वमाददीय यदिदं पृथिव्यामिति ।

अर्थ : पुनः वायु से कहा यक्ष ने,
"ओज तेज कहो अपना ।
महिमा क्या है कहो आपकी,
साहस विक्रम है कितना ?"

बोला वायु बड़े गर्व से,
यक्ष को दिखलाने नीचा ।
"मेरा बल तुम देखना चाहो,
तनिक करो अपनी चिन्ता ।

मै आधार बिना करता हूँ,
महा शून्य नभ में विचरण ।
सब कुछ ले कर उड़ जाता हूँ,
गति न मेरी रुके किंचन ।

पृथिवी-तल के सभी पदारथ,
मैं ले कर हूँ उड़ सकता ।
सब हो जाता मेरे वश में,
भारी हो चाहे हलका ।"

श्लोक : कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्विकं निर्मलं फलम् ।

अर्थ : श्रेष्ठ कर्मों का फल सात्विक सुख और निर्मल ज्ञान होता है ।

(गीता अ 14 श्लोक 66)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन्त्र १० : तस्मै तृणं निदधावेतदादत्स्वेति
तदुपप्रेयाय सर्व जवेन तन्नशशाकादातुं
स तत एव निववृते । नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद्
यक्षमिति ।

अर्थ : दिया यक्ष ने वह ही तिनका,
रक्खा जो अगनी आगे ।
कहा, "उड़ाओ इसको देखूँ,
कितना बल विक्रम तुझ में ।"

तिनका देख हँसा वह वायु,
"जान गया बुद्धि तेरी ।
इस तिनके से परखोगे तुम,
महिमामयी शक्ति मेरी ।

मैं वायु मैं पवन प्रभंजन,
चक्रवात तूफान प्रबल ।
ले मैं उड़ सकता हूँ नभ में,
पृथिवी तल के द्रव्य सकल ।"

तुच्छ मान कर उस तिनके को,
वायु झपटा उस ऊपर ।
पर वह तिनका तनिक हिला ना,
शिशु सम भू से रहा चिपक ।

एक बार फिर वायु देव ने,
अपनी पूरी शक्ति लगा-
चाहा उस तिनके को उड़ाना
पर न उसको हिला सका ।

लज्जित हो कर के मुँह नीचा,
लौट इन्द्र से वह बोला ।
"यक्ष कौन वह दिव्य पुरुष है,
मैं ना यह हूँ जान सका ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सम्बन्ध दोहा :- देख निराशा वायु की, लगे सोचने देव ।
कैसे परिचय पा सकें, कौन यक्ष है यह ।

हो निराश जब लौटा वायु,
सोचा मिल कर देवों ने ।
"इन्द्र देव ही एक देव हैं,
जो इस यक्ष को जान सकें ।"

इन्द्र का गमन

मन्त्र ११ : अथेन्द्रमब्रुवन् मघवन्नेतद्विजानीहि किमेतद्यक्षमिति तथेति तदभ्यद्रवत् तस्मात् तिरोदधे ।।

अर्थ : विनती की तब उन देवों ने,
इन्द्र देव से, जा सादर ।
"हे सुरनायक ! आप एक हैं,
देवों के रक्षक पालक ।

आप ही जाकर जानिये भगवन् !
यक्ष कौन यह दिव्य पुरुष ।"
तथाऽस्तु कह इन्द्र उठे तब,
जा पहुँचे उस थल सत्वर ।

यक्ष वहाँ पर कहीं नहीं था,
देखा जब वह हुए चकित ।
सारे नभ-मण्डल में खोजा,
दृष्टि दौड़ाई इधर-उधर ।

मन ही मन वह लगे सोचने,
"कहाँ गया वह दिव्य पुरुष ।
अभी-अभी तो यहीं खड़ा था,
गया कहाँ मुझ से छिप कर ।"

सम्बन्ध दोहा :- देख इन्द्र को, यक्ष वह, हुआ जब अन्तर्धान ।
पड़े सोच में इन्द्र तब, भूल गये अभिमान ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उमा का प्रादुर्भाव

मन्त्र १२ : स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहुशोभमानामुमा ँ हैमवतीं ता ँ होवाच किमेतद्यक्षमिति ।।

अर्थ : नभ में देखा इन्द्र देव ने,
जहाँ पर यक्ष खड़ा था ।
वहाँ खड़ी थी नारी सुन्दर ।
हेममयी प्रतिमा जैसी ।

अपनी स्वर्णिम आभा से जो,
धरा-गगन करती ज्योतित ।
खड़ी चित्र सी देख रही थी,
इन्द्र देव को अति चिन्तित ।

उस देवी के निकट पहुँच कर,
इन्द्र देव ने यह पूछा,
"हे महिमामयि ! मुझ से कहिए,
यक्ष कौन था दिव्य पुरुष ।

आप यहाँ हैं किस कारण से,
कृपया दें अपना परिचय ।"
"मैं उमा हूँ ब्रह्म की शक्ति,
ज्ञान दात्री ब्रह्म विद्या ।

हे सुरनायक ! मैं ब्राह्मी हूँ,
सकल सृष्टि में व्याप रही ।
प्रेरित होकर उसी ब्रह्म से,
तुम्हें ज्ञान देने प्रकटी ।"

तृतीय खण्ड समाप्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चतुर्थ खण्ड

इन्द्र को उमा का उपदेश :-

मन्त्र १ : सा ब्रह्मेति हो वाच ।
ब्रह्मणो वा एतद्विजये महीयध्वमिति
ततो हैव विदाञ्चकार ब्रह्मेति ।।

अर्थ : कहा उमा ने, "इन्द्र देव हे !
यक्ष नहीं वह स्वयं ब्रह्म थे ।
तुम्हें देख जो हुए तिरोहित-
वे संचालक हैं जगती के ।

ऊर्जावान् पदारथ जग के,
ऊर्जित उन की ही शक्ति से ।
विजयी देव पराजित दानव,
हुए हैं उन की ही शक्ति से ।

दानव दल पर विजय तुम्हारी,
है यह विजय उसी भूमा की ।
उस को तुमने अपनी माना,
भेद न परब्रह्म का जाना ।

यह मिथ्या अभिमान तुम्हारा,
करने को प्रक्षालित वह ही ।
तुम्हें ज्ञान देने के हेतु,
यक्ष रूप धर कर थे प्रकटे ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर्षण अनिल अनल शक्ति का-
कर के उस ने तुम्हें बताया ;
तुम देवों में जो है शक्ति,
वह शक्ति है ब्रह्म देव की ।

उस की शक्ति के बिन कोई,
तिनका तक भी हिला न सकता ।
उस की कृपा बिना कोई भी,
उसके भेद को पा न सकता ।

ज्ञान देने तुम देवों को,
मुझ को प्रेरित किया उसी ने ।
उसी ब्रह्म की मैं हूँ शक्ति,
मेरी भिन्न न सत्ता उस से ।

इन्द्र को ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति :-

सम्बन्ध दोहा :- उमा शक्ति के कथन से, इन्द्र देव मतिमान् ।
ज्ञान ब्रह्म का पा गये, हुआ दूर अभिमान ।।

अति नम्र हो कहा इन्द्र ने,
जान गया मैं ब्रह्म की महिमा ।
उसी ब्रह्म की ही किरपा से,
मैंने उस को है पहचाना ।

वह महिमामय महामहिम है,
उसकी महत् कृपा जन-जन पर ।
मंदमति जन जान न पायें,
वह है बहता करुणा सागर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्मा विष्णु और महेश्वर ,
शक्तिमान् उसकी शक्ति से,
मैं मेरा यह भाव व्यर्थ है,
उस की शक्ति व्याप्त सभी में ।

तीन देवों का महत्व :-

मन्त्र २ :तस्माद्वा एते देवो अतितरामिवान्यान्
देवान्यदग्निर्वायुरिन्द्रस्ते ह्येनन्नेदिष्ठं
पस्पृशुस्ते ह्येनत्प्रथमो विदाञ्चकार ब्रह्मेति ।।

अर्थ : अग्नि वायु इन्द्र देवता,
अन्यद् देवों से श्रेष्ठ हैं ।
इन तीनों ने ब्रह्म का दरशन-
सब से पहले किया निकट से ।
सुनी ब्रह्म की पावन वाणी,
उस को जैसे परसा कर से ।
अनुभव किया उस की शक्ति का,
व्याप रही जो हर ज़र्रे में ।

इन्द्र की सर्व-श्रेष्ठता :-

मन्त्र ३ : तस्माद्वा इन्द्रोऽतितरामिवान्यान्देवन्स
ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्श स ह्येनत्प्रथमो विदाञ्चकार
ब्रह्मेति ।।

अर्थ : इन्द्र श्रेष्ठ है इन तीनो में,
सर्व प्रथम उमा देवी से-
ज्ञान ब्रह्म का पाया इसने ।
अनुभव किया ब्रह्म-शक्ति को ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'यह ब्रह्म है' सब देवों से,
पहले जाना इसी देव ने ।
कर से छूने जैसा देखा,
ब्रह्म देव को अति निकट से ।

इसी लिए यह देवराज है,
सुरनायक है स्वर्गपति है ।
अपने तप अरु ज्ञान से पाई,
स्वर्गपति की उत्तम पदवी ।

ब्रह्म का अधिदैवत आदेश :-

मन्त्र ४ :तस्यैष आदेशो यदेतद् विद्युतो व्यद्युतदा इतीन्न्यमीमिषदा इत्यधिदैवतम् ।।

अर्थ : साधक मन में जब जगती है,
उत्कट इच्छा ब्रह्म ज्ञान की ।
दिखती उसे झलक ज्योति की,
घन में क्षणिक चमक चपला सी ।

पलक झपक सम ही क्षण भर में,
हो जाती आँखों से ओझल ।
यह दिव्य झलक साधक के,
मन प्राणों को करती आकुल ।

यक्ष का दिखना नभ मण्डल में,
फिर हो जाना आँख से ओझल ।
इन्द्र के अन्तर की आकुलता,
क्रम है साधना की सिद्धि का ।

इसे शिष्य को कहा ऋषि ने,
अधिदैवत की सरल रीति से ।
दुर्गम अरु दुर्बोध विषय को,
स्पष्ट किया रख कर रूपक में ।

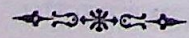

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्म का आध्यात्मिक आदेश :-

मन्त्र ५ : अथाध्यात्मं यदेतद्गच्छतीव च मनोऽनेन चैतदुपस्मरत्यभीक्ष्णँ संकल्पः ।।

अर्थ : मन इस तन में एक यन्त्र है,
हर पल जो चलता सा दिखता ।
दौड़ लगाता दूर-दूर की,
रचता रहता अपनी सृष्टि ।

कभी भूत के कभी भव्य के,
चित्र-विचित्र है दृश्य दिखाता ।
यह ब्रह्म की ही शक्ति है,
करती जो संचालन इस का ।

निर्मल मन है उज्ज्वल दर्पण,
दिखलाता जो रूप ब्रह्म का,
अपने विविध संकल्पों से,
करता सिमरण प्रति पल उसका ।

लक्ष्य दिखाता जीवातम को,
उलट पलट माया का परदा ।
यह संदेश अध्यात्म विधि से,
दिया शिष्य को परम ऋषि ने ।

व्याख्या : ब्रह्म व्याप्त है सकल सृष्टि में,
यह अनुभूति साधक मन में,
पाती दृढ़ता धीरे-धीरे ।
मन में सिमरण होता उस का ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह ही दिखता सर्व जगत् में,
द्वैत भाव मिटता अन्तर से ।
मानव देव दनुज दानव में,
लखता ब्रह्म विविध रूपों में ।

ब्राह्मी शक्ति सार्वभौम है,
वह ही तन में अन्तर्मन में ।
क्रियाशील है जड़ चेतन में,
बतलाया यह सत्य ऋषि ने ।

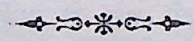

तद्वन भाव से ब्रह्मोपासना और फल

मन्त्र ६ : तद्ध तद्वनं नाम तद्वनमित्युपासितव्यम्
स य एतदेवं वेदाभि हैनँ सर्वाणिभूतानि संवाञ्छन्ति ।।

अर्थ : 'तद्वन' नाम है उस ईश्वर का,
सत्य-रूप 'आनन्दघनम्' का ।
जीवन है वह सब जीवों का,
पूजनीय वह सकल सृष्टि का ।

जैसे वन है आश्रय का स्थल,
जड़-चेतन जीवों का पालक ।
वंदनीय वह हर प्राणी का,
वाँछनीय वह सकल सृष्टि का ।

वैसे अनजाने हो चाहे,
सब जन भजते परब्रह्म को ।
आनन्द इच्छुक जीव जगत् के,
पाना चाहें सदा उसी को ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आनन्द निर्झर वह भूमा है,
अज्ञानी जन जाने इसे न ।
उसे ढूँढ़ते विषय-भोग में,
धँसते जाते दुख दल-दल में ।

सुख की मृग तृष्णा ले भटकें,
जैसे मृग भटके मरुथल में ।
प्यास बुझे न बालु कणों से,
सुख न मिले विषय भोगों से ।

जिसे दिखे जन-जन में ईश्वर,
सुख बरसे पावस के घन सम ।
हो आनन्द रूप उस जन का,
प्यार सभी का वह नर पाता ।

करता प्यार वह हर प्राणी से,
पाता प्यार वह हर प्राणी से ।
देता सुख वह हर प्राणी को,
हर प्राणी सुख देता उस को ।

अर्चन पूजन परमेश्वर का,
परम लक्ष्य है इस जीवन का ।
ऐन्द्रिय विषय नहीं सुख देते,
वे जीवन-रस को हर लेते ।

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ।। (गीता अ2 श्लोक 67)

अर्थ : जैसे जल में चलने वाली नाव को वायु हर लेती है वैसे ही विषयों में विचरण करने वाली इन्द्रियों में से मन जिस इन्द्रिय के विषय में आसक्त रहता हैं वह एक इन्द्रिय ही मनुष्य की बुद्धि को हर लेती है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्मोपदेश के लिए गुरु से प्रार्थना :

मन्त्र ७ :उपनिषदं भो ब्रूहीत्युक्ता
त उपनिषद् ब्राह्मी वाव
त उपनिषदमब्रूमेति ।।

अर्थ : इस सांकेतिक कथा को सुन कर,
शिष्य ठीक से समझ सका न ।
अति नम्र हो ऋषि से बोला,
"गुरुवर ! दीजे ज्ञान ब्रह्म का ।"

प्रत्युत्तर में कहा ऋषि ने,
"तात ! कहा जो मैंने अब तक,
वह सब ही है ज्ञान ब्रह्म का ।
उस का चिन्तन करो लगन से ।

ब्रह्म ज्ञान पाने के साधन,
अब मैं तुझ को बतलाता हूँ ।
सुनो ध्यान से अहंभाव तज,
पूरण श्रद्धा को अपना कर ।"

ज्ञान प्राप्ति के साधन :

मन्त्र ८ : तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा,
वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम् ।।

अर्थ : जप तप ध्यान इन्द्रिय-संयम,
श्रद्धा निष्ठा गुरु वचन पर ।
स्वार्थ रहित कर्म सम्पादन,
अंगों सहित वेद अध्ययनम् ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नित्य निरन्तर ईश्वर चिन्तन,
ये हैं ब्रह्म ज्ञान के साधन ।
इन पर ब्रह्म ज्ञान प्रतिष्ठित,
ये स्तम्भ हैं ज्ञान भवन के ।

सत्य सदन है ब्रह्म ज्ञान का,
सत्य रूप है परब्रह्म का ।
सत्य से होता ज्ञान ब्रह्म का,
सत्य में ही है वास ब्रह्म का ।

ब्रह्म ज्ञान प्राप्ति के साधनों की व्याख्या :

तप : तप है मूल आधार सृष्टि का,
तप है सिरजन यन्त्र विधि का ।
तप से सृष्टि रचे विधाता,
तप से हो विस्तार जगत् का ।

तप से चित्त में आये शुद्धता,
तप से बुद्धि में निर्मलता ।
तप से धृति त्याग तितिक्षा,
तप से दृढ़ता भगति निष्ठा ।

तन से मन से इन्द्रिय संयम,
पूरण श्रद्धा शास्त्र वचन पर ।
वास एकाकी विषय विरक्ति,
प्रथम सृति तापस जीवन की ।

द्वेष करे न कभी किसी से,
सदा प्रेम व्यवहार सभी से ।
स्वार्थ रहित परमारथ में रत,
शत्रु मित्र में भाव एक सम ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुष्ट सदा हो निरासक्त मन,
ईश्वर चिन्तन करे निरन्तर ।
वाणी में हो मधुर मृदुलता,
पर हित साधन वचन सरलता ।

सत्य अहिंसा क्षमा धीरता,
मन में चिन्तन ब्रह्म भाव का ।
तन में मन में हो पावनता ।
काम क्रोध का त्याग सर्वथा ।

अनुद्वेगकर बोले वाणी,
स्पृहा करे न धन सम्पद् की ।
युक्ताहार विहार चेष्टा,
भेद करे न अपने पर का ।

स्वाध्याय हो ज्ञान पिपासा,
विद्वानों पर पूरण श्रद्धा ।
आत्म निरीक्षण दोष निरासन,
आस्तिक भाव ब्रह्मभावित मन ।

यह ही तप है यही तपस्या,
ज्ञानी जन कहते हैं ऐसा ।
तप से मन होता है पावन,
बनता ब्रह्म ज्ञान का साधन ।

ज्ञान मिले जिज्ञासु जनों को-
तत्त्वदर्शी विद्वान् जनों से ;
वेद परायण महापुरुषों से,
ध्येता ज्ञाता ज्ञानी जनों से ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दम : इन्द्रियाँ अति प्रबल मानव की,
ये हैं बिदके अश्वों जैसी ।
रथी आत्मा के तन रथ को,
खींच गिरातीं विषय गर्त्त में ।
कर्षित करतीं हैं ये मन को,
विषयों का रस लेने हेतु ।
सद्बुद्धि को ये हर लेतीं,
हनन करें पावनता मन की ।
ब्रह्म-ज्ञान का इच्छुक साधक,
इन्द्रियों को विषयासक्ति से ।
करदे उपरत सब से पहले,
ईश्वर चिन्तन से मन साधे ।
सत् विवेक युक्त बुद्धि से,
लखे आत्म की निर्विशेषता ।
दुःख रूप विषय भोगों की,
ज्ञान से परखे क्षणभंगुरता ।
यह ही दम है, इन्द्रिय संयम,
ब्रह्म ज्ञान पाने के हेतु ।
प्रथम पग है यह साधक का,
साधना सिद्धि की सरणी पर ।

कर्म : राग द्वेष ईर्ष्या मत्सर,
निर्मल मन पर मैला परदा ।
ढके हुए है सत्स्वरूप को,
तत्त्व रूप न दिखे परम का ।
स्वार्थ रहित कर्म छितराते,
इस परदे को तार-तार कर ।
करवाते हैं आतम दरशन,
प्रेम भाव ज्योति बिखरा कर ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर्म-योगि को दिखता ईश्वर,
सब जीवों में एक रूप वह ।
अपनी आत्मा सब में दिखती,
उस से भिन्न नहीं है कुछ भी ।

करे द्वेष घृणा वह किस से,
भिन्न नहीं है कोई उस से ।
ब्रह्म भाव भावित वह साधक,
हो जाता है ब्रह्म रूप ही ।

अहं भाव तज रहे कर्मरत,
ब्रह्म बसे हिरदय के अन्तर ।
मुक्ति पाये भव बँधन से,
जनम-मरन का फंदा टूटे ।

वेद : ऋग् यजुः साम और अथर्वः,
चार वेद भण्डार ज्ञान का ।
अमित ज्ञान भरा है उन में,
आध्यात्मिकता भौतिकता का ।

वेद ब्रह्म हैं ब्रह्म रूप हैं,
ब्रह्म से ही ये सम्भूत हैं ।
श्रेय प्रेय के पथ निर्देशक,
मुक्ति भुक्ति के मारग दर्शक ।

विज्ञान ज्ञान जगत् में जितना,
व्याख्यान है वेद ज्ञान का ।
वेद ज्ञान अथाह सिन्धु है,
यह दुर्बोध है यह दुर्गम है ।

नर नारी अरु युवा वृन्द को,
ये हैं मंगल ज्ञान प्रदाता ।
भाग्यशाली है मनुज वृन्द वह,
अगम ज्ञान जो इन का पाता ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वेदाङ्ग : शिक्षा कल्प निरुक्तं ज्योतिष,
व्याकरण और छन्द का शिक्षण ।
छः अंग हैं ये वेदों के,
इन से वेद का ज्ञान-सुरक्षित ।

इन छः अंगों के बिन रहता,
वेद-ज्ञान अधूरा कचरा ।
अन्तर्निहित गूढ़ अर्थों से,
अनजाना रहता अध्येता ।

शिक्षा : 'शिक्षा' वह शास्त्र है जिस में,
शुद्ध उच्चारण स्वर वर्णों का,
उदात्त, अनुदात्त, स्वरित से,
ज्ञान दिया है वेद गान का ।

कल्प : 'कल्प' शास्त्र में विविध यज्ञों के,
विधि विधानों का है वर्णन ।
'होता' आदि ऋत्विजों के भी,
कृत्यों का है किया विभाजन ।

निरुक्त : 'निरुक्त' शास्त्र में शब्द विवेचन,
प्रकृति प्रत्ययों का विश्लेषण ।
शब्द समुच्चय अर्थ विविधता-
का वर्णन विस्तार सहित है ।

व्याकरण : 'व्याकरण' शब्दों वर्णों के,
शुद्ध रूप का करे निरूपण ।
प्रत्ययों उपसर्गों के योग से,
कैसे अर्थ में हो परिवर्तन ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

व्याकरण है मुख वेदों का,
इस के बिना ज्ञान अर्थ का,
कठिन ही नहीं है असम्भव है ।
अभिन्न अंग है यह वेद का ।

ज्योतिष : 'ज्योतिष' कहता ग्रह नखतों की,
गति स्थिति अरु दशा दिशा को
असर धरा पर इन का कैसे-
पर्यावरण बदल देता है ।

समय विभाजन संवत्सर का,
ज्योतिष शास्त्र का ही विषय है ।
कब हो पूनम कब अमावस,
ग्रसन कब रवि शशि का होगा ।

कौन ग्रह कब छिप जाएगा,
कितने समय में पुनः दिखेगा ।
उदय अस्त का समय सूर्य का,
ज्योतिष शास्त्र सब कहता है ।

किस दिन यज्ञ मंगलमय होगा,
किस दिन सफल संयोग रहेगा ।
यज्ञ-याग के लिए समय के,
शुभ अशुभ का ज्ञान है देता ।

छन्द : वेद ऋचायें पद्य-बद्ध हैं ।
छन्दोमय इन का स्वरूप है ।
किस छन्द में कौन ऋचा है,
प्रयुक्त छन्द की क्या महत्ता है ।

किस छन्द में दी ऋचा की,
अर्थ सिद्धि में क्या शक्ति है ।
छन्द ज्ञान के बिना जानना,
यह सम्भव अरु सरल नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महिमा को गायत्री छंद की,
जानते हैं विद्वज्जन सारे ।
इस के वर्णों में है कितनी,
निहित सिद्धिदा शुभदा शक्ति ।

किस छन्द का कौन देवता,
मंगलदायक है याजक को ।
किस छन्द में लघु-गुरु क्रम,
याजक हित में शुभ साधक है ।

सत्यमायतनम् : ब्रह्म सत्य है सत्य रूप है,
सत्य में ही है वास ब्रह्म का ।
भूत भविष्यत् वर्त्तमान में,
विद्यमान वह सर्वकाल में ।

उद्भव में वह स्थिति में वह है,
प्रलय और संसृति में वह है ।
सर्व नष्ट हो जाने पर भी,
अवशिष्ट जो रहता, वह है ।

अक्षर अव्यय अविकारी वह,
अजर अमर है अविनाशी वह ।
अज अनन्त है वह अम्रित है,
सर्वेश्वर वह सर्व रूप है।

देवता हो कर देव की अर्चा,
यह निश्चित सिद्धान्त वेद का ।
ब्रह्म ज्ञान का इच्छुक मानव,
सत्यव्रती हो सत्य परायण ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्म सत्य में सदा प्रतिष्ठित,
तत्त्व ज्ञान है सत्य अधिष्ठित ।
सत्य सदन है परब्रह्म का,
दृढ़ स्तम्भ यह ज्ञान भवन का ।

ग्रन्थ पाठ का फल :-

मन्त्र ९ : यो वा एतामेवं वेदापहत्य
पाप्मानमनन्ते स्वर्गे लोके ज्येये
प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठति ।।

अर्थ : उपनिषदों में वर्णित विद्या,
ब्रह्म ज्ञान की साधन-भूता ।
जो जन ध्याता चिन्तन करता,
सर्व पाप क्षय होते उस के ।

ब्रह्म-भाव भावित वह साधक,
मुक्ति पाता भव बन्धन से ।
शाश्वत शान्ति मिलती उसको,
प्राप्त परम पद ईश कृपा से ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संपूर्ण चतुर्थ खण्ड की व्याख्या :

ज्ञान रूप ज्योतिर्मय धाता,
सर्व शक्तिमत् चिन्मय सत्ता ।
नित्य मुक्त अक्षर अविनाशी,
अन्तर्यामी घट-घट वासी ।

उस का चिन्तन नित्य निरन्तर,
उस का ध्यान धरे उर अन्तर ।
तन में मन में जल में थल में,
हर प्राणी के हृदय विवर में ।

रमा हुआ तन में प्राणों सा,
वह अरूप है सर्व रूप है ।
सर्व शक्तिमय सार्वभौम है,
हर ज्योति में वह ज्योतिर्मय ।

प्राण, प्राण का जीवन जी का,
तन प्राणों में तेज उसी का ।
कान में श्रवण शक्ति है उसकी ।
आँख में दृष्टि उसी विभु की,

हर प्राणी है रूप उसी का,
सकल सृष्टि में विविध रूप वह ।
अनुभव करता जो जन हर पल,
दिखे जिसे कण-कण में ईश्वर ।

ऐसा ज्ञान रहे जिस जन में,
सम दृष्टि हो हर प्राणी में ।
कुत्ते में गौ में हाथी में,
एक-आत्म तत्त्व का दरशन-

जो जन अपने मन में करता,
ब्रह्म रूप हो उस मानव का ।
निर्मल मन पावक सम पावन,
बसे जग में जल में जलज सम ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्वनियन्ता सर्वेश्वर को,
सर्वशक्तिमय भूमा विभु को ।
देखे ओत-प्रोत जगती में,
द्वेष रहे न तनिक किसी से ।

ब्रह्म भाव व्यापे उस जन में,
ब्रह्म दिखे उस को सृष्टि में ।
जड़ चेतन सब ब्रह्म रूप है,
ऐसा भाव रहे जब मन में ।

दिखे ब्रह्म अपने अन्तर में,
जगती की हर एक शिरा में ।
उस की सत्ता का हो अनुभव ,
उस की शक्ति की अनुभूति ।

जगती की हर एक क्रिया में,
गति स्थिति में कृति धृति में ।
तन प्राणों के हर स्पन्दन में,
श्वास-श्वास के प्रकंपन में ।

प्रकृति नटी की हर क्रीड़ा में,
सम्भूति में और विलय में ।
क्रियारत वह कर्म निरत है,
कर्ता रक्षक वह पालक है ।

वह हँसता है पावस घन में,
विद्युत ज्योति भर मेघों में ।
नृत्य निरत सागर सरिता में,
गीत मधुर स्वर खग कलरव में ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्रुद्ध दृष्टि उस की लाती है,
रौद्र रूप धर प्रलय भयंकर ।
धरा दरकती थर्राती है,
लावा बहता आग उगल कर ।

बरसे नभ से जलती उल्का,
तारे टूट-टूट कर गिरते ।
लुप्त हो जाता रवि बिम्ब है,
धूल उड़ाते वातचक्र में ।

वह महिमामय करता क्रीड़ा,
नाच-नाच कर के मस्ती में ।
जो जन जाने यह लीला है,
लीलाधर की विविध रूप में ।

वह ज्ञानी है, इसी ज्ञान से,
मिलती मुक्ति, शाश्वत शान्ति ।
जिसे ज्ञान यह मिल जाता है,
ब्रह्म रूप वह हो जाता है ।

जैसे पाये स्वर्ण शुद्धता,
अगनी की ज्वाला में जल कर ।
वैसे क्षय होता पापों का,
ज्ञान-अग्नि भट्ठी में तप कर ।

ब्रह्मज्ञान का मार्ग कठिन है,
छुरिका धार सदृश दुस्तर है ।
उस पर चलते यती तपस्वी,
ब्रह्म परायण मुनि मनस्वी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सत्य रूप है परब्रह्म का,
सत्य में ही है वास ब्रह्म का ।
सत्य सुकर सोपान कहा है,
सुखद ब्रह्म भवन सरणी का ।

शम दम क्षान्ति धृति तितिक्षा,
ब्रह्म भवन के दृढ़ खम्भे हैं ।
इन खम्भों पर ही स्थिर रहता,
ब्रह्म ज्ञान का भव्य भवन है ।

एक बार जिस को भा जाती,
इस प्रसाद की भव्य भव्यता ।
तुच्छ है दिखती उस मानव को,
सकल सृष्टि की सर्व सम्पदा ।

पूर्णकाम हो जाता वह नर,
पा लेता है ब्रह्म-रूपता ।
लख अनेक में एक सत्य को,
वह आनन्दित रहे सर्वदा ।

सकल शोक नष्ट हों उसके,
आशा तृष्णा की विरति से ।
अनासक्त मन निर्मल दर्पण,
दिखता उस में ब्रह्म निरंजन ।

अहंकार का झीना परदा,
ढके हुए है ब्रह्म का मुखड़ा ।
उसे हटा दो रूप दिखेगा,
शिव सुन्दर उस परम सत्य का ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्वैत द्वेष का ताप मिटेगा,
समता भाव निहार कर्णों से ।
स्नेह सुधा से सरस हृदय पर,
शीतलता बरसे हौले से ।

जल से मल धुलता है तन का,
बुद्धि निर्मल ज्ञान मनन से ।
सत्य से मन में आये शुद्धता,
अन्तस्-शुद्ध हो तप विद्या से ।

ऐसे मानव के मानस पर,
ईश-कृपा की वर्षा होती ।
मिल जाते पावन परमेश्वर,
सरल हृदय उस दयावन्त को ।

पा लेता वह महामहिम को,
ज्योतिरूप उस परमपुरुष को ।
तेज पुंज आदित्यवर्ण को,
जिस के ज्ञान से मिलती मुक्ति ।

कटते तन्तु मृत्युपाश के,
उस का ज्ञान ही एक मार्ग है ।
भवसागर से पार गमन का,
अन्य नहीं है कोई उपाय-

छूटने का मृत्यु के मुख से,
जनम मरन दुखमय फन्दे से ।

चतुर्थ खण्ड समाप्त

केनोपनिषद् समाप्त

ॐ शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यक्षोपाख्यान : आध्यात्मिक संकेत

'इन्द्र' और 'यक्ष' का वर्णन,
सांकेतिक अध्यात्म कथा ।
सूक्ष्म ब्रह्म ज्ञान देने को,
यह वृत्तान्त है रचा गया ।

इन्द्र देव मन का प्रतीक है,
दिव्य शक्तियों से पूरण ।
ब्रह्मानन्द सोम पान कर,
पाय तृप्ति परम पावन ।

प्रभु-प्रेम रस अमृत बरसा,
सरसाये हिरदय धरती ।
उस रसता से ही साधक मन,
पाये देव-दरशन शक्ति ।

पात्र कथा के 'अगनी' 'वायु',
दिव्य शक्तियाँ मानस की ।
तपः पूत अन्तर्मन में जो-
स्वयमेव उद्भव पातीं ।

'अगनी' है संकल्प दिव्य वह,
सर्व-प्रथम जगे मन में ।
ब्रह्मैकात्मता पाने को-
साधक रत हो साधन में ।

ऐन्द्रिय आकर्षण सब तज कर,
अवरोधों को लाँघ बढ़े ।
इच्छा शक्ति प्रबल प्रबलतर,
करे निरन्तर दृढ़ता से ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

त्याग सर्व प्रमाद यत्न रत,
ब्रह्म-भाव भावित विचरे ।
लक्ष्य साध कर बढ़ता पग-पग,
धीरता-वृत्ति को धारे ।

'वायु' प्राण-महाशक्ति है,
प्रमा प्रदान करे मन को ।
कटे अविद्या का आच्छादन,
मानस निर्मल पावन हो ।

तन प्राणों में चेतनता भर,
देती गति मन-मेधा को ।
सत्य-लोक आरोहण हेतु,
दूर करे अवरोधों को ।

संशय सभी मिटाये मन के,
बोध जगाये अन्तर में ।
उद्भव पायें सुप्त शक्तियाँ,
उदित दिव्यता हो मन में ।

मरन काल में प्राण शक्ति ही,
ले जाती है जीवों को ।
कर्मों के अनुरूप पहुँचाती,
उन को उनके लोकों को ।

प्राणायाम परायण ऋषियों-
ने यह तथ्य सत्य माना ।
प्राणों के रोहावरोह से,
अवचेतन मन को जाना ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन से इस का गठबँधन है,
दोनों मित्र हैं सहचर हैं ।
सत्यव्रती दोनो हैं करते,
क्रिया ज्ञानमय कौशल से ।

'यक्ष' ब्रह्म है भूमा शक्ति,
कण-कण में जो व्याप रही ।
वह अदृश्य अरूप तेजसी,
धुमा रही सारी जगती ।

उस शक्ति से आवेष्टित है,
सकल सृष्टि की हर शक्ति ।
उस ज्योति से ही ज्योतित है,
सकल जगत् की हर ज्योति ।

'उमा' ब्रह्म की ज्ञान शक्ति है,
मार्ग-दर्शिका ब्रह्मविद्या ।
ब्रह्म-तत्त्व का ज्ञान इन्द्र ने,
इसी शक्ति से ही पाया ।

'यक्ष' का दिखना होना ओझल,
ब्रह्म ज्योति का है द्योतन ।
जो बादल में दिख चपला सा,
हुआ आँख-ओझल तत्क्षण ।

उमा देवी ने इन्द्र देव को,
तत्त्व-ज्ञान यह समझाया,
"ब्रह्म-शक्ति का तेज विश्व के-
कण-कण में है व्याप रहा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुम्भकार वह जग रचना का,
धुमा रहा अपना चक्का ।
गढ़ता तोड़ता घट जीवों के,
नित नव विविध रूप रचता ।

उस की इच्छा सिरजन करती,
विविध रूपिनी यह सृष्टि ।
उद्भव गति-स्थिति की कर्त्री
एक ब्रह्म की है शक्ति ।

वही नियामक संचालक है,
विरथा है अहंता ममता ।
एक वह ही सर्वातम है,
विविध रूप धरे दिखता ।

शक्तिमान् जो भी जड़-चेतन,
शक्तिमान् उसी से हैं ।
उस शक्ति के अंश मात्र से,
सभी शक्तियाँ पूरित हैं ।

उस की शक्ति के बिन अगनी,
जला सका न इक तिनका ।
उस की इच्छा बिन वायु भी,
उड़ा सका न वह तिनका ।"

जब तक मन में अहंकार था,
दूर इन्द्र से था ईश्वर ।
अनल अनिल की अहंभावना,
बनी यक्ष का आच्छादन ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तजा इन्द्र ने अहंभाव जब,
जगी ब्रह्म की जिज्ञासा ।
दिखी उसे तब तत्त्व-ज्ञानदा,
उमा रूपिनी ब्रह्म-विद्या ।

ज्ञान प्राप्त कर उस विद्या से,
मोद मुदित आनन्द मगन ।
प्रभु प्रेम का अमृत पी कर,
तमस रहित था पावन मन ।

कथा सार :

दैवी दानवी भावों का यह,
युद्ध सदा होता आया ।
अन्तर्मन में पूर्ण सृष्टि में,
व्याप रही इन की माया ।

कभी हार होती देवों की,
जय पा जाते हैं दानव ।
कभी विजय मिलती देवों को,
और पराजित हों दानव ।

विजय पराजय का यह पहिया,
महाकाल के स्यन्दन का ।
घूमता रहता रुके कभी न,
विरथा श्रम है निरसन का ।

जन्म-जन्म के श्रम साधन से,
जीत दानवी भावों को ।
कभी कोई है यति तपस्वी,
पा लेता परमातम को ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नर से नारायण बन जाता,
इन्द्र देव वह स्वर्गपति ।
होती जिस पर कृपा ईश की,
मिले उसे दैवी शक्ति ।

तपः पूत उस की आभा से,
बिखरे ऐसी दिव्य छटा ।
पसरे पावनता जगती में,
परम-धाम हो जाये धरा ।

आविर्भाव ऐसी शक्ति का,
युगों-युगों में कभी-कभी-
होता है, जब ईश कृपा की,
त्रैलोकी पर हो वृष्टि ।

स्वयं ब्रह्म महामानव बन,
उतरें धरती के तल पर ।
हर लेते संतों की पीड़ा,
दुष्टों का कर सर्व-दमन ।

गीता में है श्री कृष्ण ने,
स्पष्ट कहा यह पारथ से ।

"हे भारत ! जब धर्म की हानि,
होती है धरती तल पर ।
बढ़े अधर्म अदम्य दुष्टता,
त्रस्त संत हों भय कंपित ।

उन संतों के त्राण के हेतु,
दुष्टों का करने संहार ।
धर्म की रक्षा के कारण मैं,
धरती पर लेता अवतार ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रादुर्भाव यक्ष का देता,
इस सत्य का भी संकेत ।
देवों के अभिमान का ज्यूं ही,
परब्रह्म ने पाया भेद ।

प्रकटा विभु धर रूप यक्ष का,
देवों को देने संदेश ।
ब्रह्म की शक्ति सर्वोपरि है,
मान करो मत भूल इसे ।

पल भर में वह सब हर सकता,
उस की महत्ता को समझो ।
उस सर्वेश्वर की शक्ति को,
अहंकार तज नमन करो ।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ।।

(गीता अ 9 श्लोक 34)

अर्थ : हे अर्जुन तू मुझ में मन लगा, मेरा भक्त हो, मेरा पूजन कर, मुझे प्रणाम कर, इस प्रकार अपनी आत्मा को मुझ से जोड़ कर निरन्तर मेरे परायण हुआ तू मुझे ही प्राप्त होगा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रश्न-उत्तर

प्रश्न : कौन धरा पर करे रंगोली ?
टाँके कौन गगन तारे ?
कौन चितेरा चित्रित करता,
सागर पर्वत नद नारे ?

रंग-रंग के सुमन संजोये,
लतिकाओं के आँचल में ।
हरी दूब पर लाल वधूटी,
हीरे मोती माला में ।

किस की है मुस्कान गगन में,
फूटे पूरब लाली में ?
भरता कौन है माणिक मोती,
धरती माँ की झोली में ?

कौन बिछाये नरम पाँवड़े,
द्यु से सागर के तल तक ?
कौन उतर आएगा नभ से,
ठुमक-ठुमक धर कोमल पग ?

कौन बहारों के रंगों से,
चमकाए धरती मुखड़ा ?
कौन नहा कर चन्द्र ज्योति में,
छिटकाए तारक मुक्ता ?

कौन बिगाड़े रूप धरा का,
लिए सुनामी लहरों को ?
कौन धधका भीषण ज्वाला,
कम्पाये धरती माँ को ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उत्तर : रचा विधाता ने सृष्टि का,
रंगमंच निज हाथों से ।
उस पर नाचे प्रकृति नर्तकी,
विविध भाव मुद्राओं में ।

सूत्रधार इस रंग-थली का,
देता है संकेत उसे ।
दिखलाये वह उन भावों को,
उस को जो आदेश मिले ।

कभी रुद्ररूप धर नाचे,
बनती काली विकराला ।
कभी नाचती राधा बनकर,
मुरलीधर की बृजबाला ।

एक देवता वह ही बसता,
बाह्य जगत् में अन्तर में ।
देखो उस को अन्तर्मन में,
बाह्य सृष्टि की रग-रग में ।

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय ।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ।।

(गीता अ 7 श्लोक 7)

अर्थ : हे धनञ्जय ! इस सृष्टि का मुझ से भिन्न कोई अन्य परम कारण नहीं । यह सारी सृष्टि मुझ परमात्मा में, धागे में पिरोये मनकों की तरह गुँथी हुई है ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शान्ति पाठ

मन्त्र : ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक् प्राणश्चक्षुः ।
श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि ।।
सर्वं ब्रह्मौपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म
निराकरोत् । अनिराकरणमस्त्वनिराकरणं
मेऽस्तु । तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते
मयि सन्तु ते मयि सन्तु ।
ॐ शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

अर्थ : तन के सभी अंग हे भगवन् !
हृष्ट पुष्ट हों शक्तिशाली ।
नाक कान प्राण वा आँखें,
तेरे तेज से हों परिपूरण ।

कर्म-इन्द्रियाँ वाणी सहित सब,
ओज वीर्य से हों संचालित ।
तेरा तेज व्याप्त हो इन में,
गतिशील हों तव शक्ति से ।

भूलूँ कभी न मैं ईश्वर को,
ईश्वर कभी न भूले मुझको ।
जो स्वरूप ब्रह्म का वर्णित,
वेदों में उपनिषदों में है-

उस का चिन्तन सदा करूँ मैं,
रहूँ सदा उस भाव से भावित ।
शाश्वत हो सम्बन्ध ब्रह्म से,
अनन्य भाव हो मेरा उस में ।

उस की दया-दृष्टि की वर्षा,
मुझ पर बरसे नित्य निरन्तर ।
उस का सदा करूँ मैं चिन्तन,
वेदों के अनुकूल हो जीवन ।

ईश दया से नष्ट हों सारे, दैहिक दैविक भौतिक ताप ।
हृदय शुद्ध हो मन हो निर्मल, रोग रहित तन हो निष्पाप ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

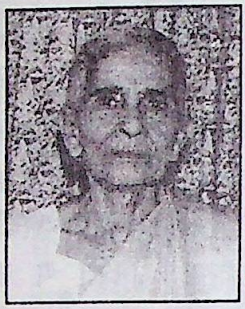

लेखिका : शकुन्तला सेठ

1. जन्म : 27 नवम्बर 1924

2. शिक्षा : शास्त्री (संस्कृत) एम० ए० हिन्दी,
बी०ऐड० (B.Ed.) टीचर्ज़ ट्रेनिङ्ग

3. कार्यक्षेत्र :

(क) ***शिक्षण :*** 1943–47 प्राध्यापिका 'विद्यापीठ' महिला ओरियण्ट कालेज
1948–88 प्रधानाचार्या 'विद्यापीठ' हाई स्कूल
1988–आजतक (आजीवन) एडवाईज़र 'विद्यापीठ' पब्लिक हायर सैकेण्डरी स्कूल

(ख) ***सामाजिक :*** **नारी जागरण**

(1) 1942–48 अनुशीलन समितियाँ

मुहल्लावार अनुशीलन समितिओं की स्थापना द्वारा महात्मा गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम का प्रचार एवं प्रसार जैसे विदेशी वस्तु बहिष्कार, खादी प्रयोग, चरखा कताई, छुआछूत-उन्मूलन, हरिजन बस्तियों में रामायण पाठ आदि के सत्संग, नशा सेवन दुर्वृत्तियों से बचने की प्रेरणा, देश भक्ति उद्बोधन एवं राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन ।

(2) 1948–50 महारानी सेवादल

श्रीमति तारादेवी, महारानी जम्मू कश्मीर राज्य, की अध्यक्षता में "महारानी सेवादल" ।

1. भारतीय सेना के प्रधान सेनापति जनरल के० एम० करियप्पा की सहायता से महिलाओं को शस्त्र संचालन शिक्षा (मिल्ट्री ट्रेनिङ्ग) ।
2. शरणार्थी कैम्पों में शरणार्थियों की सेवा साँत्वना ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

3. शरणार्थियों को दी जाने वाली सहायता : कपड़े, सिलाई मशीन तथा नकद राशि के वितरण में महारानी साहिबा को सहयोग ।
4. सैनिकों के मनोबल को समुन्नत बनाए रखने के लिए सैनिक शिविरों में देश भक्ति संगीत, ऐतिहासिक नाटक मंचन जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन । (साथी युवतियों के सहयोग से)

(ग) ***1943 से आजतक आध्यात्मिक चेतना :***

महिला सत्संग, रामायण पाठ, गीता तथा उपनिषद् अध्ययन, यज्ञ हवन के द्वारा महिलाओं में आध्यात्मिक चेतना जागृति कार्यक्रमों का आयोजन आजतक चलता है ।

(घ) ***सदस्यता :-***

विभिन्न संस्थाओं में मनोनीत सदस्य के रूप में कार्य :-

1. 1944–1945 जम्मू-कश्मीर 'पाठ्य-पुस्तक' सलाहकार बोर्ड
2. 1959–1960 जम्मू-कश्मीर शिक्षा निदेशालय (स्कूल लायब्रेरी पुस्तक-चयन कमेटी)
3. 1958–1960 जम्मू-कश्मीर यूनिवर्सिटी श्रीनगर (Faculty of Oriental Learning)
4. 1975–1977 रेडियो काश्मीर जम्मू, प्रोग्राम सलाहकार कमेटी
5. 1976–1978 रेडियो काश्मीर जम्मू (संगीत श्रवण कमेटी) (Audition Committee, Classical & Light Music)

4. साहित्य :-

1. **सम्पादन :** उषा हिन्दी मासिक पत्रिका का सम्पादन (1942-1946)
2. **मौलिक साहित्य लेखन :-**
   1. **सरसिज** (कविता संग्रह)
   2. **समय धारा** (कविता संग्रह)
   3. **उजास** (कविता संग्रह)
   4. **ज्योति कण** (कविता संग्रह)
   5. **त्रिविभा** (गद्य-पद्य मिश्रित रचनाएँ)
   6. **रास्ता और मंज़िल** (कहानी संग्रह)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाल साहित्य

7. **सुन लो बच्चो**
(पंचतन्त्र तथा लोक कथाओं पर आधारित पद्यात्मक कथाएँ)

8. **संगीत कथाएं**
(ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित पद्यात्मक संगीत-कथाएं)

अनुवाद :- (संस्कृत से हिन्दी में अनुवादित पद्यात्मक रचनाएँ)

9. **ज्योतिर्गमय** - ईशावस्योपनिषद् का पद्यात्मक अनुवाद तथा अन्य मौलिक कविताएँ

10. **कठोपनिषद्** पद्यात्मक हिन्दी अनुवाद

11. **प्रश्नोपनिषद्** पद्यात्मक हिन्दी अनुवाद

12. **केनोपनिषद्** पद्यात्मक हिन्दी अनुवाद

5. सम्मान :-

1989 1. **हिन्दी सेवा सम्मान**
- हिन्दी साहित्य मण्डल, जम्मू

1989 2. **श्री मुल्ख राज सराफ अवार्ड**
- जमना देवी ज्ञान देवी सराफ ट्रस्ट, जम्मू

1994 3. **हिन्दी पत्रकारिता सम्मान**
- ज़म्मू-काश्मीर हिन्दी पत्रकार संघ

1994 4. **पत्रकारिता सम्मान**
- नव जम्मू

1994 5. **राष्ट्र भाषा सेवा सम्मान**
- जम्मू-काश्मीर राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, जम्मू

1996 6. **हिन्दी साहित्स सेवा सम्मान**
- संस्कार भारती जम्मू

प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान
- भारतीय योग संस्थान, जम्मू

PS
94.5 S 11 K
3819

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Shiv Art Printers
Mob.: Ustad, Jammu Mob.: 9419138268

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE